मान मंदिर बरसाना

मासिक पत्रिका, वर्ष ९, अंक ११, 'कार्तिक-मार्गशीर्ष' वि.सं. २०८२ (नवम्बर २०२५ ई.)

मूल्य१०/-

श्री मानमंदिर में श्री गिर्राजजी का पूजन

श्री माताजी गोशाला में पूज्यश्री बाबा महाराज द्वारा दीपावली के शुभ दिन दीपोत्सव के साथ श्रीराधामानबिहारीलालजी का पूजन किया गया

श्री रसमण्डप में पूज्यश्री बाबा महाराज द्वारा श्री गिर्राजजी का पूजन एवं छप्पनभोग

श्री रसमंदिर में पूज्यश्री बाबा महाराज द्वारा श्री गिर्राजजी का पूजन एवं छप्पनभोग

अनुक्रमणिका

	विषय- सूची	पृष्ठ- संख्या
१	ब्रजभावुक-संग से वास्तविक उपासना	०५
२	मंगलमयी सृष्टि की जननी 'गौमाता'	०७
३	ब्रजभाव में बाधक 'भोगैश्वर्य'	०८
४	बाबाश्री का ब्रजभाव	१२
५	श्रीसंत-करुणा	१५
६	दक्षता व सहिष्णुता	१९
७	समर्पणभाव से सच्ची रक्षा	२२
८	श्रद्धा-निष्ठा का प्रभाव	२५
९	संत-शरणागति से ही सम्यक् प्रचार	२८
१०	ब्रज में साँझी-लीला का स्वरूप-महत्त्व	३१
११	श्रीब्रज-वसुन्धरा की दीपावली	३२
१२	श्रीमाताजी गौशाला में श्रीरामकथा का सफल आयोजन	३४

।। राधे किशोरी दया करो ।।

हमसे दीन न कोई जग में,
बान दया की तनक ढरो ।
सदा ढरी दीनन पै श्यामा,
यह विश्वास जो मनहि खरो ।
विषम विषयविष ज्वालमाल में,
विविध ताप तापनि जु जरो ।
दीनन हित अवतरी जगत में,
दीनपालिनी हिय विचरो ।
दास तुम्हारो आस और की,
हरो विमुख गति को झगरो ।
कबहूँ तो करुणा करोगी श्यामा,
यही आस ते द्वार पर्‌यो ।

INSTAAL करें --- PLAY STORE से-----

MAANINI APP

बाबाश्री के सत्संग/कीर्तन/भजन, साहित्य, आदि यहाँ से FREE - DOWNLOAD कर सकते हैं व सुन सकते हैं ।

श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप प्रातःकालीन सत्संग का ७.३० से ८:३० बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:०० से ८:०० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं ।

संरक्षक- श्रीराधामानबिहारीलाल ,
प्रकाशक – राधाकान्त शास्त्री, मानमंदिर ,गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)
mob. राधाकांत शास्त्री 9927338666,
Website :www.maanmandir.org ,
(E-mail :info@maanmandir.org)

परम पूज्यश्री रमेश बाबा महाराज जी द्वारा सम्पूर्ण भारत को आह्वान –
"मजदूर से राष्ट्रपति और झोंपड़ी से महल तक रहने वाला प्रत्येक भारतवासी विश्वकल्याण के लिए गौ-सेवा-यज्ञ में भाग ले ।"
*** योजना ***
अपनी आय से १ रुपया प्रति व्यक्ति प्रतिदिन निकालें व मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक अथवा वार्षिक रूप से इकट्ठा किया हुआ सेवाद्रव्य किसी विश्वसनीय गौसेवा प्रकल्प को दान कर गौरक्षा कार्य में सहभागी बन अनन्त पुण्य का लाभ लें । हिन्दूशास्त्रों में अंशमात्र गौसेवा की भी बड़ी महिमा का वर्णन किया गया है ।

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें । हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है – **सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ । जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि ।।**(श्रीमद्भागवत३/७/४१)
अर्थ:- भगवत्तत्त्वके उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुड़ाकर उसे अभय कर देने में जो पुण्य होता है, समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य उस पुण्य के सोलहवें अंश के बराबर भी नहीं हो सकता ।

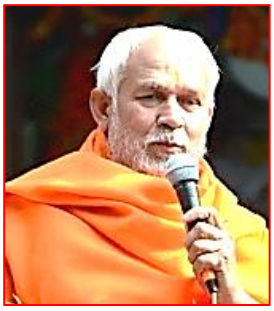

प्रकाशकीय

संग्रह-परिग्रह से सर्वथा परे रहने वाले परम पूज्य 'श्रीबाबामहाराज' की 'श्रीभगवन्नाम' ही एकमात्र सरस सम्पत्ति है । ब्रज-संस्कृति के संरक्षक, प्रवर्द्धक व उद्धारक बाबाश्री ने परम विरक्त होते हुए भी बड़े-बड़े ब्रज-सेवा के कार्य संपादित किये । श्रीजी के अन्तरंग परिकर, ब्रज रस रसिक, पूज्य बाबा श्रीप्रियाशरणजीमहाराज का सानिध्य प्राप्त कर 'अखण्ड ब्रजवास' जीवन का व्रत हो गया । ब्रज का संरक्षण-संवर्द्धन करते हुए सम्पूर्ण जीवन ब्रज-सेवार्थ समर्पित करने वाले इन महापुरुष का तपोमय जीवन भक्तिपथ के पथिकों के लिए अनुकरणीय बन गया । गंगा की भाँति निर्मल, हिमालय की भाँति अचल, भास्कर की भाँति तेजस्वी, शिशुवत् सरलता, जल जैसी तरलता, वृक्ष-सी सहिष्णुता – गीता का सही प्रतिनिधित्व करने लगा यह व्यक्तित्व । गत् सत्तर वर्षों से ब्रज में क्षेत्रसन्यास (ब्रज के बाहर न जाने का प्रण) लिया एवं इसी सुदृढ़ भावना से विराज रहे हैं । ब्रज, ब्रजेश व ब्रजवासी ही आपका सर्वस्व हैं । असंख्यों लोग आपके सत्संग-सान्निध्य के सौभाग्य से सुरभित हुए हैं और हो रहे हैं । श्रीबाबा के विशुद्ध भक्तिमय सत्संग से प्रभावित श्रद्धालुजनों के (बाबा की ब्रजभावमयी रहनी के विषय में) विशेष अनुभव हैं, विलक्षण अनुभूतियाँ हैं, विविध विचार हैं, विपुल भाव साम्राज्य है, विशद अनुशीलन हैं । इस लोकोत्तर व्यक्तित्व (विभूति) ने विमुग्ध (विमोहित) कर दिया है बड़े-बड़े विवेकियों का हृदय । वस्तुतः कृष्णकृपालब्ध पुमान् (मनुष्य) को ही गम्य (ज्ञेय) हो सकता है यह व्यक्तित्व । रसोदधि के जिस अतल-तल में आपका सहज प्रवेश है, यह अतिशयोक्ति नहीं कि रस-ज्ञाताओं का हृदय भी उस तल से अस्पृष्ट ही रह गया । आपकी आंतरिक स्थिति क्या है, यह बाहर की सहजता, सरलता को देखते हुए सर्वथा अगम्य है । आपका अन्तरंग लीलानंद, सुगुप्त भावोत्थान, युगल मिलन का सौख्य इन गहन भाव-दशाओं का अनुमान आपके सृजित साहित्य के पठन से ही कुछ अंश में सम्भव हो सकता है । आपकी अनुपम कृतियाँ – श्रीरसिया रसेश्वरी, स्वर वंशी के शब्द नूपुर के, ब्रजभावमालिका (बरसाना), भक्तद्वय चरित्र इत्यादि हृदयद्रावी भावों से भावित कृतियाँ हैं । आपके सत्संग-सरिता में जनसामान्य भी सहज अवगाहन कर रसानन्द की अनुभूति करता है । साधक-साधु-सिद्ध सबके लिए सम्बल हैं आपके सत्संगमय रसार्द्रवचन । दैन्य की सुरभि से सुवासित अद्भुत असमोर्ध्व रस का प्रोज्वल पुंज है यह दिव्य रहनी, जो अनेकानेक पावन अध्यात्मास्वाद के लोभी मधुपों का आकर्षण-केन्द्र बन गई है । सैकड़ों ने छोड़ दिए घर-द्वार और अद्यावधि शरणागत हैं । ऐसा महिमान्वित-सौरभान्वित वृत्त विस्मयान्वित कर देने वाला स्वाभाविक है । रस-सिद्ध-संतों की परम्परा इस ब्रजभूमि पर कभी विच्छिन्न नहीं हो पायी । श्रीजी की यह गह्वर वाटिका जो कभी पुष्पविहीन नहीं होती, शीत हो या ग्रीष्म, पतझड़ हो या पावस, एक न एक पुष्प तो आराध्य के आराधन हेतु प्रस्फुटित ही रहता है । आज भी इस अजरामर, सुन्दरतम, शुचितम, महत्तम, पुष्प (बाबाश्री) का जग स्वस्तिवाचन कर रहा है । आपके अपरिसीम उपकारों के लिए हमारा अनवरत वन्दन, अनुक्षण प्रणति भी न्यून है । प्रार्थना है अवतरित प्रीति-प्रतिमा विभूति से कि निज पादाम्बुजों का अनुगमन करने की शक्ति हम सबको प्रदान करें । आपकी प्रेम प्रदायिका, परम पुनीता पद-रज-कणिका को पुनः-पुनः प्रणाम है ।

महाभाग्यवान हैं वे जन, जिन्होंने आपका साक्षात्कार किया है, कर रहे हैं और करेंगे । असीम-अनुपम है यह 'जीवनी' प्राणकथा ..... फिर इस विशद चरित्र के मनन-लेखन-कथन की क्षमता, पटुता व सच्चरित्रता भी तो नहीं है । आपके श्रीचरणों में कोटि-कोटि प्रणति ।

कार्यकारी अध्यक्ष

राधाकान्त शास्त्री

श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

ब्रजभावुक-संग से वास्तविक उपासना

बाबाश्री के सत्संग 'श्रीराधासुधानिधि' (२३/१/१९९९) से संकलित

भावाभिव्यक्ति –

अध्यक्ष – डॉ. श्रीरामजीलालजी शास्त्री,

श्रीमानमंदिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

वृन्दानि सर्वमहतामपहाय दूराद् वृन्दाटवीमनुसर प्रणयेन चेतः ।
सत्तारणीकृत सुभाव सुधारसौघं राधाभिधानमिह दिव्य निधानमस्ति ॥ (श्रीराधासुधानिधि – ८)

श्रद्धा तीन प्रकार की होती है । ललितादि सखियाँ श्रीजी की सेवा करती हैं, उनमें आराम से श्रद्धा हो जाती है । भावबल की श्रद्धा भी आराम से हो जाती है । कोई आचार्य हैं, विरक्त महात्मा भजन करते हैं, उनके प्रति भी भाव सहजता से हो जाता है । कठिन भक्ति है स्थापना बल की श्रद्धा । **"ये क्रूरा अपि पापिनो न च सतां सम्भाष्य दृश्याश्च ये सर्वान् वस्तुतया निरीक्ष्य परमस्वाराध्यबुद्धिर्मम ।** (श्रीराधासुधानिधि – २६४) ब्रज के क्रूर, दुष्ट, पापी चोर आदि को देखकर भी जब भाव की उत्पत्ति होती है, तब सारा ब्रज राधाकृष्णमय दिखता है, ऐसा हृदय बनना कठिन है । हृदय की दो वृत्तियाँ हैं – भाव की वृत्ति और अभावमयी वृत्ति । अभाववृत्ति हटने पर केवल भाववृत्ति होने पर ही धाम की उपासना हो सकती है । ऐसा भाव होना कठिन है क्योंकि हमारे मन में सदा अभाव की वृत्ति ही दौड़ती रहती है । ये सब चीजें जब बन्द होकर सर्वत्र भावदृष्टि होती है, उसे कहते हैं 'धामोपासना' । धाम में वास करने मात्र से ही राधारानी मिल जायेंगी, बिना किसी प्रयास या साधन के भगवान् मिल जायेंगे, कोई प्रयास मत करो; भजन की भी आवश्यकता नहीं है, अपने आप भगवान् मिल जायेंगे । **"जा मज्जन ते बिनहिं प्रयासा । मम समीप नर पावहिं बासा ॥"** (श्रीरामचरितमानस, उत्तरकाण्ड – ४) बिना प्रयास के भगवान् हमारे पास आ जायेगा, वही धाम बरसाना है, रसोपासना कोई खेल नहीं है । सारे ब्रज के बारे में सोचो तो – **स्वानन्दसच्चिद्घनरूपतामतिर्यावन्न वृन्दावन वासिजन्तुषु । तावत् प्रविष्टोऽपि न तत्र विन्दते ततोऽपराधात् पदवीं परात्पराम् ॥** (श्रीवृन्दावनमहिमामृत – शतक १७ – श्लोक ८३) यह श्लोक धामोपासना का, धामोपासना में बहुत शीघ्र सिद्धि पाने का एक ज्योति स्तम्भ (light pillar) है । धाम में निष्ठा के साथ रहने से बहुत जल्दी राधारानी-नन्दलाल की प्राप्ति होती है । हम धाम में गये, बरसाना गये, गोवर्धन गये, अथवा बरसाना-नन्दगाँव में कहीं भी रहते हों, वृन्दावनवासी जन्तु – ब्रज में जितने भी जीव हैं, मनुष्य हैं, सब जीवों में स्वानन्दसच्चिद् घनरूपता मति हो, सबमें सच्चिदानन्दघन मति जब तक नहीं होगी तब तक प्रविष्टोऽपि – धाम में रहने के बाद भी कुछ अनुभूति नहीं होगी जैसे गंगाजी में कछुए । ऐसी मति न होने पर धाम में रहने पर भी परात्पर पदवी नहीं प्राप्त होगी । राधामाधव धाम में निरन्तर लीला कर रहे हैं, वे तुम्हारे सामने नहीं आयेंगे । ये एक प्रकार का judgement (अंतिम निर्णय) है, उपासना करने चले हो तो उपासना के लिए धाम में सब जगह यह भाव रखना चाहिए । ऐसा भाव तभी आएगा जब ऐसे भाव वाले का संग किया जाए; ऐसा संग होता नहीं है । सदा आलोचना में ही हम लोग लगे रहते हैं । जहाँ अभाव की चर्चा होती है, अभावमयी बातें होती हैं, उसको कहने-सुनने से कैसे सच्चिदानन्द बुद्धि हो जायेगी ? इसलिए ऐसा संग मिले जो हर समय भाव बनाये क्योंकि जीव तो सदा अभाव की ओर दौड़ता है । हमारा अनादिकाल का अभ्यास यही है निन्दा करना । अभाव और निन्दा की बातें किसी भी उपासना को सिद्ध नहीं होने देंगी, ब्रज की उपासना की बात तो छोड़ो । रसोपासना तो बहुत कोमल उपासना है, मृदु उपासना है, बड़ी कोमल भावनाओं का संग्रह है । रसोपासना कोई खेल नहीं है किन्तु यदि भक्ति करने भी चले हो तो यहाँ भी कहा गया है – **"अन्यस्य दोषगुणचिन्तनमाशु मुक्त्वा सेवाकथारसमहो नितरां पिब त्वम् ।"** (श्रीभागवत-माहात्म्य ४/८०) सेवा-कथा का रस भी तभी मिलेगा, जब गुण-दोष चिन्तन वाली बुद्धि से मनुष्य छूट जाए । 'धर्मं भजस्व' - धर्म क्या है ? धर्म है – 'वैष्णव धर्म' (भागवत धर्म) – इसमें सर्वत्र भगवद्-भाव रखा जाना चाहिये । 'त्यज लोक धर्मान्' – संसार के जितने लोक धर्म हैं, उनको छोड़ दो । कुटुम्ब-परिवार आदि साधु-समाज में भी धर्म है, गृहस्थियों की तरह वहाँ भी पंगत के

लिए निमन्त्रण पत्र दिया जाता है, यह सब लोक धर्म है । 'सेवस्व साधु पुरुष' – 'साधु पुरुष' माने भावुक भक्त का संग पकड़ो, तब तुम्हारी कामतृष्णा छूटेगी । परन्तु सब का बाप है कि दोष-गुण चिन्तन छोड़ दो; इसके बाद सेवा का आनन्द ले लो, कथा का आनन्द ले लो, लीला का आनन्द ले लो, सब दरवाजे खुल जायेंगे; इसको कहते हैं स्थापना बल की श्रद्धा । मनोबल की श्रद्धा, भावबल की श्रद्धा आसान है परन्तु सर्वत्र राधाकृष्णमय या सच्चिदानन्द भाव रहे, यह बिना भावुक भक्त के संग के नहीं होगा । 'संत' माने कपड़े बदल लेने वाले व्यक्ति नहीं, 'भावुक भक्त' चाहे भले ही वह गृहस्थ है, भावुक होना आवश्यक है । जब मैं (बाबाश्री) पहली बार ब्रज में आया था तो सिद्ध सन्त ग्वारिया बाबा के शिष्य श्रीजी मन्दिर के श्री किशोरी लाल गोस्वामीजी ने मुझसे कहा था – 'बेटा ! मेरी एक बात मान लो, तुम भले ही मान मंदिर में दस-बारह घंटे सो जाना किन्तु साधु-संग मत करना ।' यह सुनकर मुझे बड़ा धक्का लगा । मैंने उनसे कहा कि सभी भक्ति शास्त्रों में तो भक्ति और भगवान् की प्राप्ति के लिए साधु-संग को अनिवार्य बताया गया है फिर आप ऐसा क्यों कहते हैं ? गोस्वामीजी ने कहा कि जिन साधुओं के संग की बात शास्त्र में कही गयी है, आजकल ऐसे साधु तुम्हें दिखाई नहीं देंगे । तुम साधु-समाज में जाकर देखो, वहाँ तुमको कृष्णचर्चा, भगवच्चर्चा नहीं मिलेगी । क्या मिलेगा ? या तो वे साधु-समाज में होने वाले भण्डारे की चर्चा करते हैं कि कहाँ आज पंगत हो रही है अथवा एक दूसरे की निन्दा में लगे रहते हैं । ऐसे तथाकथित साधुओं का संग बहुत ही खतरनाक है । निम्बार्क सम्प्रदाय के प्रसिद्ध रस-ग्रन्थ महावाणी में कहा गया है – 'पहले रसिक जनन को सेवै' पहले भावुक भक्त का संग मिले, उससे भावमयी दृष्टि की प्राप्ति होती है । भावमयी दृष्टि को समझें । भाव अनंत प्रकार का है – **भक्तियोगो बहुविधो मार्गैर्भामिनि भाव्यते । स्वभावगुणमार्गेण पुंसां भावो विभिद्यते ॥** (श्रीभागवतजी ३/२९/७) 'भाव' आँखों में नहीं, अन्तःकरण में, चित्त में रहता है । श्रीहितहरिवंशमहाप्रभु के शिष्य और विशाखा सखी के अवतार परम रसिक सन्त श्रीहरिरामव्यासजी ने कहा है – **"कहा भयौ वृन्दावनहि बसै । ज्यों लगि व्यापत माया त्यों लगि, कहा भयौ घर तें निकसै ॥"** घर छोड़कर ब्रज – वृन्दावन धाम में आये और यहाँ भी वही माया लग रही है तो क्या फायदा घर छोड़ने से, कुआँ छोड़ा और वहाँ से निकलकर भाड़ में गिर पड़े । लोग बड़े-बड़े मंदिर-आश्रम बना लेते हैं, वहाँ भोग-राग के पीछे बड़े-बड़े माल घुटने लग जाते हैं । उधर ही वृत्ति चली जाती है, व्यासजी कहते हैं कि यदि ये मेवा-मिष्ठान्न आदि खाओगे तो विषय-भोग ही जोर करेगा । **"धन मेवा को मंदिर सेवत, करत कोठरी विषय रसै । कोटि-कोटि दंडवत करै कह, भूमि ललाट घिसै ॥"** ऊपर से दण्डवत करता है किन्तु **"मुँह मीठे मन सीठे कपटी"** मन फीका है, मन में भाव कुछ नहीं है । **"बचन रचन नैननि बिहसै ।"** वचन-रचन का मतलब है कि दण्डवत करके निकले किन्तु बाहर आकर निन्दा करने लग गया कि देखो, वह कैसी बात बनाता है ? अरे, तुम तो दण्डवत करके निकले थे, अब बाहर आकर ऐसी बात करते हो । **"मन्त्र ठगोरी कबहुँ न तन्त्र गद, मानत विषय डसै ॥"** विषयों का जहर नहीं उतर रहा है, जबकि मन्त्र- जप, माला-जप खूब कर रहे हैं । त्याग का भी ड्रामा किया जाता है । पैसा तो नहीं छूते परन्तु कमण्डल में माल घोटते हैं । **"कंचन हाथ न छुअत कमण्डल, मैं मिलाय विलसै । व्यास लोभ रति हरि हरिदासनि, परमारथहि खसै ॥"** लोभ के कारण भगवान् और हरिदासों की महिमा समझ नहीं पाया । ये पद इसलिए नहीं बनाये गये हैं कि हम धाम को छोड़ दें । ये इसलिए बनाये गये हैं कि हम लोग धाम में रहकर बहुत जल्दी सिद्धि को प्राप्त कर लें, बहुत शीघ्र श्रीकृष्ण लीला में प्रवेश हो जाये । कोई साधक प्राकृत भावों से बचते हुये धाम के प्रति भावना करता है तो बहुत जल्दी सिद्धि प्राप्त होती है किन्तु दोष चिन्तन रहते हुये ऐसा सम्भव नहीं है । **"राम धामदा पुरी सुहावनि ।" "अति प्रिय मोहि इहाँ के बासी । मम धामदा पुरी सुख रासी ॥** धाम में रहने से आप बिना मेहनत के राधामाधव के नित्य धाम में पहुँच जाओगे । धाम में वास करने के लिए दोष-गुण चिन्तनमयी वृत्ति, अभावमयी वृत्ति छोड़ना आवश्यक है । जब तक अभावमयी वृत्ति बनी रहेगी, परनिन्दा में हम लगे रहेंगे तब तक धाम में रहने पर भी हमें सर्वत्र सच्चिदानन्दमयी मति की प्राप्ति नहीं होगी, धाम का कण-कण, यहाँ के वासी राधाकृष्णमय नहीं प्रतीत होंगे । भावमयी वृत्ति की प्राप्ति के लिए भावुक भक्त का निरन्तर संग परम आवश्यक है ।

मंगलमयी सृष्टि की जननी 'गौमाता'

भावाभिव्यक्ति – परम गौ-सेवी

संत 'श्रीब्रजशरणजीमहाराज'

श्रीमाताजी गौशाला, श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

हम सब लोगों को गौमाता के सच्चे स्वरूप व महामहिमा को जानना परमावश्यक है । गौमहिमा को जानने वाले वन्दनीय महज्जन-संत-महापुरुष भी नित्य निरन्तर गाय माता के यश-वैभव का श्रवण-मनन-कथन करते रहते हैं । जिस राष्ट्र व धर्म में गौवंश की ससम्मान सेवा होती है, वहाँ हर प्रकार से मंगल ही मंगल होता है । कम शब्दों में कथनाशय यही है कि गौसेवा ही समस्त उपलब्धियों व श्रीभक्ति का सार एवं आधार है । गौमाता की कृपामयी सन्निधि के बिना किसी भी धाम, लोक व जीव-जगत् की कल्पना भी नहीं की जा सकती है । प्रेमरसरूपा भक्ति के सर्वोच्चतम धाम 'गोलोक' की महामहिमा भी गायों के कारण ही है, इसीलिए परम रसमय लोक का नाम भी गोलोक (गायों का लोक) है । गौमाता ही प्रेम रस का संपोषण करती हैं । गौ माता की सेवा सन्निधि से प्रेम रस संचरित होकर राधा माधव की लीलाओं के रूप में परिणित होता है । सम्पूर्ण सृष्टि, समस्त भक्तिमार्गों का व ब्रज भक्ति का प्रमुख आधार स्तम्भ गौमाता ही है । श्रीवशिष्ठजीमहाराज कहते हैं –

गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं महत् । गावो भूतं च भव्यं च गावः पुष्टिः सनातनी ॥

"समस्त प्राणियों की प्रतिष्ठा गाय है, परम मंगल मूल गाय है, दिव्य प्राणियों की आधार गाय है, सनातन संस्कृति का पोषण करने वाली माँ गाय ही है ।" आदर्श मानव-जीवन व गौरवशालिनी सनातन संस्कृति की परम पोषिका गोमाता हैं । जीव-कल्याण तथा विश्व-मंगल में गोवंश की बहुत बड़ी भूमिका है । भक्तिमय जीवन की गाय ही परम निधि स्वरूपा हैं; प्राचीन भारत का भक्तिमय वैभव 'गौ' पर आधारित था, भारतवर्ष के उज्जवल भविष्य की परिकल्पना भी एकमात्र गोसेवा के संवर्द्धन पर टिकी हुई है । शारीरिक व आध्यात्मिक-पोषण का सबसे बड़ा माध्यम गाय ही है ।' 'भारतवर्ष' परम पुण्यमयी साधन की भूमि है, जहाँ पर लोग भक्तिमय साधन करके सहज ही भगवान् व उनकी भक्ति की प्राप्ति कर लेते हैं; जिस परम पावनकारी देश में स्वयं साक्षात् श्रीभगवान् के अवतार होते हैं तथा संत-ऋषि-महात्माजन आराधना के द्वारा सम्पूर्ण सृष्टि का मंगल करते हैं; ऐसी अति अनुपम गौरवशालिनी भारतभूमि में 'गोमाता' का प्रमुख स्थान है, जिसके कारण से ही भारत 'भारत' है अर्थात् 'निरन्तर भक्ति में रत' होने से इसे 'भारत' कहते हैं । भारतवर्ष में गौवंश की सेवा होने पर हर प्रकार से प्रत्येक क्षेत्र-विभाग में भरपूर सहयोग मिलता है । 'गाय माता' पालन-पोषण करने वाली ऐसी महाजननी है जो अपने प्रत्येक अंग-प्रत्यंग से सभी प्रकार से सहयोग कर सम्पूर्ण सृष्टि का परम मंगल (कल्याण) करती है । जगत्-स्थितिकी कारणस्वरूपा सत्ताओंमें एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सत्ता गोमाताकी है, यह बात ऊपर उद्धृत किये हुए भगवान् वसिष्ठके वचनसे स्पष्ट है । 'गाय' शब्द सुनते ही हृदय में सरलता-सहजता-सरसता के भावों की अनुभूति होने लगती है । वस्तुतः गौ माता का स्वभाव सहज सरल-सरस होने से सबकी पूज्या सेव्या-आराध्या है तथा समस्त सृष्टि की आधार स्वरूपा परम जननी है । गायों से ही स्वयं श्रीराधा-माधव युगल रसराज लालित-पालित व पोषित होते हैं । गौ कृपा से ही गोलोक की समस्त लीलाओं की भूमिका बनती है । ब्रजभूमि में तो गाय ही इष्ट है गोपालजी की । गौ सेवा के लिए ही गोपाल ने ग्वारिया बनकर गौचारण लीला की । ब्रज की समस्त लीलाओं का आधार गौमाता ही है । शारीरिक व आध्यात्मिक समस्त रोगों को दूर कर भक्तिमय स्वस्थ्य करने वाली वास्तविक जननी गाय माता है । ऐसी सहज कल्याण करने वाली गौ माता की हत्या का जघन्य अपराध सबसे बड़ा पाप है । यदि भारत माँ व भगवान् के सच्चे भक्त हो तो गायों की तन-मन-धन से यथासम्भव हर तरह से सेवा-रक्षा करो । गौमाता के प्रति सच्ची शरणागति व सच्चा प्रेम एकमात्र 'सेवा' करने से ही सार्थक होगा, जिससे गायों के आशीर्वाद से सहज श्रीभक्तिमयी कृपा बढ़ती जाएगी ।

ब्रजभाव में बाधक 'भोगैश्वर्य'

बाबाश्री के सत्संग 'श्रीधाममहिमा' (२४/१/१९९९, ५/२/१९९९) से संकलित

स्थूल, सूक्ष्म, कारण – तीन प्रकार के शरीर हैं, इन तीनों से ऊपर उठना पड़ता है, तब अनुभूति होती है; ये तीनों शरीर ही बन्धन हैं । अनादिकाल से हम लोग इन तीनों में ही जकड़े हुए हैं, जिसे देहाध्यास कहा जाता है । श्रीरामचरितमानस के अनुसार – **"जीव तब ते हरि ते बिलगान्यो । जब ते देह गेह निज मान्यो ॥"** देहाध्यास (तीन प्रकार के शरीरों की सुदृढ़ आसक्ति) के कारण हम लोग भगवान् से विमुख हो चुके हैं । भगवान् हृदय में हैं किन्तु हमें उनका अनुभव नहीं हो रहा है ।

रसोपासना, धामोपासना के मार्ग में भी शरीर से ऊपर उठना बहुत आवश्यक है । स्वामी हरिदासजी के सम्प्रदाय में कहा गया है – **"खान पान सुख चाहत अपने । प्रेम पदारथ छुये न सपने ॥"** विहारिनदेवजी इस पंक्ति में कह रहे हैं कि बात बनाने से रसिक नहीं बन जाओगे । खान-पान आदि के सुख में जो डूबा हुआ है, रस उसे कहाँ से स्पर्श कर सकता है, केवल बातें ही बातें हैं । उस परात्पर तत्त्व भगवान् श्रीकृष्ण को पाने के लिए स्थूल, सूक्ष्म, कारण आदि तीनों शरीरों से ऊपर उठना पड़ता है । दुःख की बात है कि हम लोग देह में ही उलझ जाते हैं, देह की सुविधाओं में उलझ जाते हैं । भगवान श्रीकृष्ण के परिहास करने पर रुक्मिणी जी ने भी जो कहा, उसका सार यही है कि मल – मूत्र के शरीर में रमण करने वाले स्त्री – पुरुष चिन्मय श्रीकृष्ण तत्त्व को, श्रीकृष्ण रस को प्राप्त नहीं कर सकते । (श्रीभागवतजी १० /६०/४५)

सब रसिकों ने भी ऐसा कहा है । यह मनुष्य शरीर भीतर और बाहर १२ प्रकार के मलों से भरा हुआ, दुर्गन्धयुक्त और अत्यधिक घृणित है । यह किसी भी स्थिति में उपास्य, सेवन करने योग्य नहीं है । राधासुधानिधि में रसिक महापुरुष ने कहा है कि यदि तुम राधारानी का रस पाना चाहते हो तो सबसे पहली सीढ़ी तो पार करो, तब तुमको रस मिलेगा । अलं विषयवार्त्तया नरक कोटि बीभत्सया – (रा.सु.नि. ८३) विषय वार्त्ता छूट जानी चाहिए । यह पहली सीढ़ी है । विषय आसक्ति, विषय वार्त्ता से नरक अच्छा है । हम लोग जब विषय भोगते हैं तो बड़े प्रसन्न होते हैं । नया विवाह होने पर लड़का-लड़की बहुत हर्षित होते हैं, सोचते हैं कि हमको पता नहीं क्या मिल गया किन्तु राधासुधानिधिकार कहते हैं कि विषय प्राप्ति की तुलना में हमें नरक मिल जाए तो ज्यादा अच्छा है । विषय गन्दगी का ऐसा सागर है, जहाँ जाने पर तन, मन, बुद्धि, इन्द्रियाँ, प्राण आदि सभी गन्दे हो जाते हैं । राधारानी के रसिकों ने बताया है कि विषय रस और नरक में अन्तर क्या है ? पहले तो विषय रस क्या है, इसको समझना चाहिए । यह गन्दगी उत्पन्न करने का कारखाना है । नरक क्या है ? विषय भोगों की आसक्ति से दण्डस्वरूप नरक मिला, वहाँ गन्दे मन की सफाई हुई जैसे लौंड्री या धोबीघाट में गन्दे कपड़ों की सफाई होती है । विषयों से दूषित हुए मन और इन्द्रियों की शुद्धि के बाद तुम राधारानी का नाम लेना । बात बनाने से रसिक नहीं बनोगे । मलभोजी शूकर भले ही बन जाओगे किन्तु राधारानी के रसिक नहीं बन सकते । विषय भोगों की आसक्ति के रहते श्रीजी का रस कैसे मिल जायेगा ? तुम तो धोखे में हो ।

अलं विषय वार्त्तया नरक कोटि बीभत्स्या वृथा श्रुतिकथा श्रमो बत बिभेमि कैवल्यतः । (श्रीराधासुधानिधि - ८३)

ग्रन्थकार ने कहा कि मुक्ति को भी छोड़ देना । मुक्ति के सुख से बहुत आगे है भगवान् का दिव्य सुख । वृन्दानिसर्वमहतामपहाय ..... (श्रीराधासुधानिधि – ८) समस्त महत्वृन्दों (महापुरुषों) को छोड़कर धाम का आश्रय लो क्योंकि राधिकारानी, जो दिव्य रस की निधान हैं, वे यहाँ रहती हैं । 'अस्ति' अर्थात् उनकी यहाँ नित्य प्राप्ति है । धाम के आश्रय से उनकी यहाँ नित्य प्राप्ति है । इसीलिए इस श्लोक में कहा गया है – 'वृन्दाटवीमनुसर प्रणयेन चेतः' – राधारानी की प्राप्ति का उपाय इस श्लोक में क्या बताया गया है ? राधारानी दर्शन दें अथवा उनका रस मिले तो ग्रन्थकार ने कहा की धाम का प्रेम (प्रणय) से अनुसार कर, अनुगमन कर अर्थात् आश्रय ले । उनकी प्राप्ति का इस श्लोक में एकमात्र उपाय बताया गया, अन्यत्र भी ग्रंथकार बताएँगे । चाचा श्रीवृन्दावनदासजी कृत श्रीगह्वरवन-सेवानिष्ठा के भाव का पद है –

गहवर (कानन) श्रीराधा कौ घर है । ताकी देऊँ सोहनी स्वामिनी, यह चाह मो उर अन्तर है ।।
वरुणिनि सों मग करौं ऊजरौ, सदा विराजैं पुतरी कर है । तहाँ धरौं पग जुगल अंश भुज, ललित लतन अरुझत अम्बर है ।।
हौं सुरझाय लगौं जब नाचन, नागरि (राधा) निरखि हँसत हर-हर है ।
वृन्दावन हित रूप बिलोकत, बदली दशा प्रेम भयौ भर है ।।

श्रीधाम निष्ठा का भाव श्रीराधासुधानिधि के प्रारम्भ से ही बताते चले आ रहे हैं जैसे तीसरे और चौथे श्लोकों में उन्होंने राधिका चरण रेणु का स्मरण किया है तो धाम का आश्रय और राधिका चरण रेणु का आश्रय एक ही है क्योंकि इस धाम की जो कुछ भी महिमा है, वह युगल सरकार की चरण रेणु से है । 'वृन्दावनं सखि .....'(भागवत – १०/२१/१०) इस श्लोक में प्रयुक्त शब्द देवकीनन्दन का अभिप्राय यशोदानन्दन से है । **'द्वै नाम्नी नन्दभार्याया यशोदा देवकीति च ।'** यशोदाजी के दो नाम थे । देवकी भी उनका नाम था, ऐसा शास्त्रों में लिखा है । इसलिए भागवत में वेणु गीत के इस श्लोक में प्रयुक्त शब्द देवकी सुत माने यशोदेय यशोदा नन्दन अर्थात् युगल सरकार की चरण रज यहाँ पड़ी हुई है । इसीलिए ब्रह्मा, लक्ष्मी आदि से वन्दित है यह ब्रजभूमि, अन्य कोई दूसरा कारण नहीं है । ब्रजगोपियों ने भी यही कहा था – देखो, युगल सरकार की चरण रज को ।

"धन्या अहो अमी आल्यो गोविन्दाङ्घ्रयब्जरेणवः ।" (श्रीभागवतजी १०/३०/२९)

गोविन्दाङ्घ्रयब्जरेणवः से तात्पर्य है युगल सरकार की चरणरज क्योंकि इसके ठीक पहले यह श्लोक आता है – 'अनयाऽऽराधितो नूनं .....' (भागवत - १०/३०/२८) इसका तात्पर्य है कि श्रीजी की चरणरज भी वहाँ है । "धन्या अहो अमी आल्यो ....." यह श्लोक ठीक इसके बाद आता है कि यह युगल सरकार राधा माधव की चरण रज है, राधारानी की चरण रज है, श्रीकृष्ण की चरण रज है क्योंकि इसके ठीक पहले के श्लोक में कहा गया है –

"अनयाऽऽराधितो नूनं भगवान् हरिरीश्वरः । यन्नो विहाय गोविन्दः प्रीतो यामनयद् रहः ॥

'अनया' – इसमें एकवचन है । युगल सरकार की चरणरज है, इसीलिए गोपियाँ कहती हैं – 'धन्या अहो अमी .....' (भागवत – १०/३०/२९) 'धन्या अहो' – बड़े आश्चर्य की बात है कि इस ब्रज की, इस धाम की ऐसी महिमा है । आल्यो माने हे सखियों, यहाँ की रज को देखो न, इस धाम की रज को देखो न, इसमें क्या विशेषता है ? 'यान् ब्रह्मेशो रमा देवी दधुर्मूर्ध्न्यघनुत्त्ये' इस चरणरज को ब्रह्मा, महादेव, रमा (लक्ष्मीजी) – ये सब यहाँ की रज को अपने मस्तक पर धारण करते (चढ़ाते) हैं श्रद्धा के साथ । प्रश्न हुआ कि क्यों धारण करते हैं, इसका क्या कोई हेतु है ? उत्तर है – हाँ, 'दधुर्मूर्ध्नि' – अपने मस्तक पर धारण करते हैं, 'अघनुत्त्ये' – पाप को दूर करने के लिए, 'अघ' माने पाप, 'नुत्ति' माने दूर करना । अब प्रश्न है कि पाप कहाँ से लग गया क्योंकि ब्रह्माजी हैं, महादेवजी हैं; रमादेवी (लक्ष्मीजी) तो भगवान् की नित्य अनपायनी शक्ति हैं, नित्य वक्षःस्थल पर रहने वाली हैं, परम सती हैं, परम साध्वी हैं, उनको पाप कहाँ से लग गया ? यदि उनको ही पाप लग गया तो हम जैसे लोगों की क्या हालत होगी और पाप लगा जरूर क्योंकि शुकदेवजी कह रहे हैं और पाप दूर करने का उपाय वे स्वयं कर रही हैं और ब्रह्मा, शिव भी कर रहे हैं । उन्हें पाप लग गया है किन्तु पाप माने केवल यही नहीं होता जो पाप के बारे में हम लोगों की परिभाषा है । वही पाप नहीं है । हम लोग यही समझते हैं पाप की परिभाषा । वस्तुतः एकाक्षरी कोष के अनुसार प परमेश्वरः तस्माद् अपा करोति पापः । पाप क्या है ? परमेश्वर से दूर रहना पाप है । यहाँ रसराज रसेश्वर रसिकराज आनन्दकन्द वृन्दावनचन्द्र श्रीकृष्ण से, इस रस से जो दूर हैं, जिनको उनका रस प्राप्त नहीं हो रहा है, वे पापी हैं । यही ब्रह्मा, शिव और लक्ष्मीजी का पाप है क्योंकि उनसे कोई विकर्म थोड़ी न होगा । लक्ष्मीजी भगवान् की महाशक्ति हैं, अनपायनी शक्ति हैं, वह भगवान् के वक्षः स्थल पर विराजित रहने वाली हैं, उनसे तो कोई सम्भावना ही नहीं है विकर्म की, लक्ष्मीजी के नाम से ही पाप नष्ट हो जाता है । वे भगवान् की नित्य परम संधिनी शक्ति हैं, हृदय में रहने वाली हृदयेश्वरी कहा जाता है, उनको भगवान् ने अपने हृदय में स्थान दिया है । लक्ष्मी जी ने समुद्र-मन्थन के समय समुद्र से प्रकट होकर सबको छोड़कर भगवान् को वरण किया अनन्य भाव से तो भगवान् ने उनका

सम्मान किया, अपने हृदय में रख लिया तो वहाँ पाप कहाँ है परन्तु इस रस की प्राप्ति का अभाव ही पाप है । इसीलिए लक्ष्मीजी ब्रजभूमि में आकर युगल सरकार राधामाधव की चरणरज को अपने मस्तक पर धारण करती हैं कि यह रस, यह रज मिल जाये, यह इस धाम की ऐसी रज है । "धन्या अहो अमी आल्यो....." (भागवत – १०/३०/२९) इसे गोपियों ने देखा है, समस्त देवादि गण ब्रज में आते थे, भागवत में कई बार उनके ब्रजलीला दर्शन के लिए आने का वर्णन मिलता है, जैसे - "गोपजातिप्रतिच्छन्नौ ....." (भागवत – १०/१८/११) देवगण गोपवेष में बलराम-कृष्ण की लीला का दर्शन करने के लिए ब्रज में आया करते थे किन्तु वही देवगण आते थे, जिन पर कृपा हो गयी थी । "ततो दुन्दुभयो ....." (भागवत – १०/३३/५) भगवान् आनंदकन्द रसराज श्रीकृष्णचन्द्र अपनी परम प्रेयसी (कान्ता) परमाह्लादिनी श्रीराधिकारानी के साथ रास कर रहे हैं तो देवगन्धर्व गण, जिन पर कृपा है, वे आकाश से उस रास का दर्शन करते हुए युगलसरकार का यशोगान कर रहे हैं । यह वस्तु कृपासाध्य है । "सोऽम्भस्यलं युवतिभिः ....." (१०/३३/२४) वैमानिक अर्थात् विमान पर चढ़ने वाले देवगण । वैसे कई जगह भागवत में देवताओं को बेईमान भी कहा गया है –

"अहो सुराणां च तमो धिगाढ्यताम्" – (श्रीभागवतजी १०/५९/४१)

स्वर्ग से भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा पारिजात वृक्ष उठाकर ले जाने के प्रसंग में शुकदेवजी ने तम की अधिकता के कारण देवताओं की निन्दा की है । वहाँ उन्हें बेइमान ही कहा है परन्तु ब्रजलीला के दर्शन हेतु बेइमान देवता नहीं आ सकते, यहाँ तो जिन पर श्रीकृष्ण की कृपा थी, केवल वे ही आये, तम से आढ्यता वाले नहीं । अतः रासलीला में जिन देवताओं पर कृपा थी, वे ऊपर से ठाकुर-श्रीजी पर पुष्प वर्षा कर रहे थे । भागवत में इस प्रकार अनेक स्थानों पर ब्रजलीला में देवगणों के सम्मिलित होने के प्रसंग प्राप्त होते हैं, जैसे –

"सवनशस्तदुपधार्य सुरेशाः शक्रशर्वपरमेष्ठिपुरोगाः ।" (श्रीभागवतजी – १०/३५/१५)

महादेव, इन्द्र, ब्रह्मा आदि देवगण अपने टोल के साथ श्रीकृष्ण लीला का दर्शन करने के लिए आये । विश्वनाथ चक्रवर्तीजी ने लिखा है कि इनके टोल बहुत बड़े-बड़े थे, छोटे-मोटे नहीं थे । जैसे ब्रह्माजी आये तो उनका पूरा कुनबा ही आ गया । पुरोगाः अर्थात् ब्रह्माजी अपने टोल के अगुवा थे, पीछे से सरस्वतीजी, नौ प्रजापति आदि सभी आ गये । महादेवजी आये तो वे भी अपने टोल के पुरोगा (अगुवा) हैं, उनके साथ दुर्गा, गणपति, स्कन्द आदि सब आ गये । अतः जिस पर भगवान् की कृपा होती है, राधारानी की कृपा होती है, वही ब्रजधाम में प्रवेश कर पाता है परन्तु यहाँ आने के बाद ब्रजरज को ही सब अपने मस्तक पर धारण करते हैं, यह प्रमाण है । इसीलिए विहारिनदेवजी ने कहा है – 'वृन्दावन रस दूर है, बिन सेये रज रूख ।' विहारिनदेवजी 'स्वामी हरिदासजी' के सबसे प्रमुख शिष्य थे । उन्होंने हरिदासी सम्प्रदाय की उपासना के पूरे रहस्य को खोला है । वे कहते हैं कि यदि वृन्दावन रस लेना है तो रजरानी और लतारानी का आश्रय लो, नहीं तो कुछ नहीं मिलेगा । इसीलिए उनके यहाँ ब्रजरज का लेप किया जाता था । उनके सम्प्रदाय के अनुयायी संतगण ब्रजरज को अपने सारे शरीर पर लगाया करते थे । वे ब्रज की लता की एक टेढ़ी-सी लकड़ी अपने साथ रखते थे और लता के नीचे ही रहा करते थे । प्राचीनकाल में हरिदासी सम्प्रदाय के सभी विरक्त सन्त लता के नीचे ही रहते थे । आज भी वृन्दावन में टटिया स्थान में साधुओं के रहने के लिए बिल्डिंग का निर्माण नहीं किया गया है, यद्यपि वर्तमान में तो वृन्दावन बहुत बदलता जा रहा है । सब जगह अब रज तो रही नहीं, वृन्दावन एक सीमेन्ट नगर हो गया है । अब वहाँ रूख (वृक्ष) तो रहे नहीं, लता-कुँजों की जगह बड़े-बड़े सीमेन्ट के मकानों के स्तम्भ खड़े हुए हैं ।

विहारिनदेव जी ने ऐसा क्यों कहा कि रज और रूख (वृक्ष) के बिना वृन्दावन रस दूर है । 'रज' माने मिट्टी और 'रूख' माने लता-वृक्ष । इस मिट्टी को ही उन्होंने इतना महत्त्व क्यों दे दिया क्योंकि देखने में तो ब्रजरज भौतिक जगत की साधारण-सी मिट्टी ही दिखायी देती है । इसका उत्तर यही है कि अन्य स्थलों की तरह ब्रज की दिखाई देने वाली साधारण मिट्टी में कुछ ऐसी दिव्य शक्ति है, जिसके सेवन से निश्चित राधामाधव की प्राप्ति होती है । इसीलिए "यान् ब्रह्मेशो रमा देवी दधुर्मूर्ध्न्यघनुत्तये" – (भागवत १०/३०/२९) छोटे-मोटे हम जैसे चील-कौवों की तो बात ही क्या रही, ब्रह्मा, शिव,

रमा देवी आदि भी ब्रजरज को अपने मस्तक पर धारण करते हैं इस रस की प्राप्ति के लिए; रस के व्यवधान रूप जो पाप हैं उनको दूर करने के लिए; क्योंकि ऐश्वर्य भी तो माधुर्य का बाधक हो जाता है । इसीलिए उस स्थिति में पहुँचकर वह ऐश्वर्य भी पाप है, अपनी-अपनी स्थिति होती है । हम लोगों की तो बात ही क्या है, अनन्त वैभव सम्पन्न भगवान् को भी ऐश्वर्य में रसानुभूति नहीं होती है, इसीलिए माधुर्यरस का आस्वादन करने के लिए, उन्हें ब्रज में ही आना पड़ता है तथा भगवान् का वास्तविक रूप भी माधुर्य से युक्त ही है । ऐश्वर्य को तो वह स्वयं ही छोड़ देते हैं और छुड़वा देते हैं । जिसको भी ब्रज में कृष्ण के ऐश्वर्य का ज्ञान हुआ, उसे कृष्ण ने छुड़ा दिया । "इत्थं विदिततत्त्वायां....." (भागवत – १०/८/४३)

यशोदा को अपने लाला के मुख में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का दर्शन होने पर उसके प्रति थोड़ा ऐश्वर्य भाव उत्पन्न होने पर भगवान् ने अपनी वैष्णवी माया के द्वारा उस ऐश्वर्य ज्ञान को तुरन्त ही हटा दिया । 'विदिततत्त्वायाम्' – वह ईश्वर है, यह जानकारी भी बाधक है । वह भी रसिकों के लिए पाप है । पाप अनेक प्रकार का होता है । यही पाप तो लक्ष्मीजी के ऊपर है । वे ब्रज की ग्वालिनियों का आनुगत्य कैसे ग्रहण करें, उनका ऐश्वर्य ही इसमें बाधक है । इसीलिए इस ऐश्वर्य रूपी पाप से छूटने के लिए सभी ने ब्रज में आकर यहाँ की रज का आश्रय लिया, इस मिट्टी का आश्रय लिया । जैसे विहारिनदेवजी ने कहा कि रजरानी वृन्दावन रस देती हैं, रूखरानी (लतारानी) श्यामा-श्याम से मिला देती हैं । यह धाम की महिमा है । गोपियों ने स्वयं अनुभव किया, अपना अनुभव बताया, अपना अनुभव लिखा । जैसे उदाहरण के लिए रास में श्रीकृष्ण के अन्तर्धान होने पर गोपियाँ उन्हें वन-वनान्तर में ढूँढती हैं । "रंगी त्रिभंगी श्याम के, अपांग रंग ध्यान में ।" मध्यरात्रि, पूर्णिमा की चाँदनी की छटा चारो ओर छायी है । ऐसे में गोपिकायें वृन्दावन के सुन्दर वनों-उपवनों में श्यामसुन्दर को ढूँढ रही हैं, त्रिभंगी के रंग में रंगी हुई – "विचित्र पूछती फिरें, द्रुमान सो छपान में ।"

द्रुमान (पेड़ों) से वे पागल की तरह कृष्ण के बारे में पूछ रही हैं । विरह की वह्नि से जलती, पीड़ित होकर ऐसी जा रही हैं जैसे कोई वियोग अग्नि की मशाल जा रही हो, जैसे अग्नि का उफान आता है, इस प्रकार गोपियाँ एक पेड़ से दूसरे पेड़ के पास जा रही हैं – **'वियोग वह्नि सो भरी, भरी उठें उफान में ।'** वे कृष्णविरहिणी ब्रज-गोपिकाएँ वन-उपवन में पुकार रही हैं – 'पुकारती हरि-हरि हरी-हरी लतान में ।' गोपियों ने बहुत विस्तृत अन्वेषण किया श्रीकृष्ण का, श्रीराधारानी का; अनेकों वनों में वे उन्हें ढूँढती फिरीं । **'दिक्षु तावकास्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते ।'** – ऐसी कोई दिशा नहीं बची, जहाँ वे न गयी हों । वनों में, उपवनों में सर्वत्र वे गयीं । 'विचिक्युरुन्मत्तकवद् वनाद् वनम्' उन्मत्त की तरह इस वन से उस वन में, विचिक्यु - ढूँढती रहीं । वृक्षों से पूछते-पूछते वे थक गयीं । हिरनियों से पूछा, जो भी जीव मार्ग में मिलता गया, लताओं आदि से वे श्रीकृष्ण के बारे में पूछती रहीं परन्तु कृष्ण उन्हें नहीं मिले । इसके बाद वे स्वयं कृष्ण बनकर कृष्ण लीला का अनुकरण करने लगीं ।

बाबाश्री का ब्रजभाव

परम पूज्य 'श्रीबाबामहाराज' के सम्बन्ध में श्रीभागवत कथा-व्यास 'श्रीरामजीलाल शास्त्रीजी' द्वारा कथित भावोद्गार (२१ अप्रैल, २०२५)

प्रश्न – बाबा ब्रज में पहली बार कब आये थे ?

पण्डित जी - श्रीबाबा महाराज सन् १९५३-५४ में ब्रज में आये थे ।

प्रश्न – क्या बाबा पहली बार सन् १९५३ में आये थे ?

पण्डितजी – हाँ, वे पहली बार सन् १९५३ में ब्रज आये थे किन्तु चले गये थे, फिर सन् १९५४ में आकर यहाँ स्थायी रूप से रहे ।

प्रश्न – जब बाबा महाराज ब्रज में आये थे, उस समय आपकी क्या अवस्था थी ?

पण्डितजी – जब बाबा महाराज के सम्पर्क में मैं आया तो उस समय मेरी आयु ९ वर्ष थी, उस समय मैं प्राइमरी कक्षा में पढ़ता था ।

प्रश्न – जब बाबा महाराज ब्रज में आये थे तो उनकी आयु तो बहुत कम थी, लगभग १६-१७ साल के थे, इतने कम उम्र के नव युवा साधु के प्रति आपकी माताजी का समर्पण इतना प्रबल कैसे हो गया ?

पण्डितजी – बाबा महाराज हमारे घर भिक्षा माँगने के लिए आया करते थे । हमारी माताजी सभी साधु-संतों का सम्मान करती थीं । जब बाबा घर पर भिक्षा के लिए जाते थे तो माताजी उनको भिक्षा दे दती थीं । बाबा भिक्षा लेकर मान मन्दिर आ जाते थे । बाबा महाराज भी देखते थे कि माताजी इतने प्रेम से भिक्षा देती हैं ।

प्रश्न – भिक्षा माँगना और देना अलग बात है परन्तु गुरुभाव से उनको अपने जीवन का समर्पण कर देना यह तो बिल्कुल अलग बात है ।

पण्डितजी – बाबा हमारी माताजी से ११ वर्ष छोटे थे । उनके दिव्य जीवन, उनके सदाचार-संयम, त्याग-वैराग्य पूर्ण कठोर जीवन, उनकी श्रीजी के प्रति अनन्य निष्ठा, उनकी उदारता तथा ब्रजवासियों के प्रति उनके प्रेम को देखकर माताजी की बाबा के प्रति इतनी अधिक श्रद्धा हो गयी कि वे उन्हें अपना गुरु स्वरूप मानकर उनके प्रति नतमस्तक हो गयीं ।

प्रश्न – आपका श्रीबाबा महाराज के प्रति रुझान कैसे हो गया ?

पण्डितजी – सन् १९५९ की बात है, उस समय मैं प्राइमरी विद्यालय में कक्षा पाँच में पढ़ता था । एक बार मेरे विद्यालय में एक सम्मलेन हुआ था । जूनियर हाई स्कूल के बच्चों को इनाम के रूप में एक-एक कलश दिया गया था । उस सम्मलेन में संगीत का भी एक कार्यक्रम रखा गया था । उसमें बाबा को भी बुलाया गया था । उस समय मैं बाबा को अधिक नहीं जानता था । हालाँकि बाबा भिक्षा लेने के लिए हमारे घर तो आते थे किन्तु उस समय मैं उनकी प्रतिभा से परिचित नहीं था । जब उस सम्मलेन में बाबा ने हारमोनियम बजाया तो उनकी अंगुलियाँ इस प्रकार चल रही थीं जैसे पानी में चल रही हों । बड़े-बड़े अधिकारी भी उस सम्मलेन में आये थे । उनके मनोरंजन के लिए विद्यालय में संगीत का कार्यक्रम रखा गया था । बाबा ने हारमोनियम बजाकर ऐसा मधुर गीत गाया कि मैं उनकी इस अलौकिक संगीत प्रतिभा को देखकर आश्चर्यचकित रह गया ।

प्रश्न – उन दिनों बाबा का पहनावा क्या होता था ?

पण्डितजी – बाबा महाराज अलफी पहनते थे या एक चादर लपेट लेते थे और नीचे तक की धोती पहनते थे ।

प्रश्न – अपने विद्यालय के कार्यक्रम में जब आपने बाबा का संगीत देखा तभी आपका उनके प्रति पहला आकर्षण हुआ ?

पण्डितजी – हाँ, मेरी समझ में आया कि ये तो पढ़े-लिखे और योग्य भी हैं । उस समय उनकी अवस्था लगभग २० वर्ष होगी । उस समय मैं बाबा को जानता भी नहीं था । हालाँकि वे घर में भिक्षा माँगने आते थे परन्तु उस समय मैं घर में उपस्थित नहीं रहता था । एक बार घर में जब बाबा आये तो मैं घर में ही था और मेरे स्कूल के कोर्स में संस्कृत और

अंग्रेजी भी थी । मैं कक्षा ६ में पढ़ता था । मैंने बाबा से अपनी पढ़ाई से सम्बन्धित कुछ पूछा तो उन्होंने बहुत अच्छे ढंग से समझा दिया । इस कारण से मेरा बाबा के प्रति आकर्षण और बढ़ा । मुझे समझ में आ गया कि ये बाबा तो काफी पढ़े-लिखे हैं । धीरे-धीरे मुझे पता चला कि ये महात्मा मान मन्दिर में रहते हैं । जब बाबा मान मन्दिर में रहते थे तब मेरा उनसे परिचय नहीं था, जब वे गह्वर वन में स्थित कुटी में सन् १९६० में आ गये तब मेरा उनसे परिचय हुआ, उन दिनों बाबा दिन-रात कुटी में ही रहा करते थे, यह कुटी मेरे सामने ही बनी थी किन्तु उसके बारे में मुझे अधिक स्मरण नहीं है ।

प्रश्न – उन दिनों बाबा की दिनचर्या क्या थी ?

पण्डितजी – बाबा के पास एक तानपुरा था । उसे बजाकर बाबा गाया करते थे । पहले बाबा मान मन्दिर में रहते थे, उसके बाद गह्वर वन की कुटी में रहने लगे । लगभग २०-२५ वर्षों तक वे कुटी में रहे ।

प्रश्न – बाबाश्री की माताजी स्थायी रूप से गह्वरवन में कब आयीं ?

पण्डितजी – लगभग सन् १९६०-६१ में आई थीं । उस समय बाबा मान मन्दिर चले गये थे । शाम के समय वे माताजी से मिलने के लिए कुटी पर आते थे । यहाँ आने से पहले माताजी ने बाबा का बहुत पता लगाया था कि वे कहाँ हैं ? उनका कहीं पता नहीं चल रहा था । प्रयाग के निकट मनौरी हवाई अड्डा है । वहाँ पास में एक बहुत बड़ा पीपल का पेड़ था । उस पर एक ब्रह्म राक्षस रहता था, वहाँ एक देवी का उपासक रहता था, उसने इस ब्रह्मराक्षस की भी सिद्धि कर ली थी । उसके पास लोग अपनी समस्यायें लेकर जाते थे तो वह उनका समाधान करता था । माताजी बाबा की खोज में उसके पास भी पहुँचीं । उस उपासक ने माताजी से कहा कि मैं तो मंगलवार के दिन अनुष्ठान करता हूँ और माताजी शनिवार को वहाँ पहुँची थीं । बड़ी ही करुणा के साथ माताजी ने कहा कि अब मैं दुबारा तो यहाँ नहीं आ सकती हूँ । उस उपासक ने माताजी से कहा कि ठीक है, आप यहाँ बैठो । ऐसा कहकर वे स्नान करने के लिए गये । स्नान करके आये और फिर पूजा की । पूजा करते समय उनकी आँखें मशाल की तरह बिल्कुल लाल हो गयीं । उन्होंने माताजी से कहा – 'अब बताइए, क्या समस्या है ?' माताजी के मुख से केवल इतना ही निकला – 'मेरा बेटा'.....। माताजी के शब्द सुनकर वह बोला – 'ठीक है ।' एक-दो मिनट तक उसने अपनी आँखें बन्द रखीं, उसके बाद उसने कहा – 'माताजी ! जहाँ आपका बेटा है, वहाँ मेरा प्रवेश नहीं है । संसार में यदि वह किसी अन्य स्थान पर होता तो मैं दो मिनट में उसे आपके सामने उपस्थित कर देता । इस समय वह मथुरा जिले के बरसाना में राधारानी के एक मन्दिर में है ।' उस उपासक ने मान मन्दिर नाम भी बता दिया था । उसने कहा कि आपका पुत्र वहाँ रहता है परन्तु मेरा वहाँ तक प्रवेश नहीं है । मैं तो आपसे यही प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे ही अपना बेटा समझ लीजिये और मेरे स्थान पर ही रहिये । यहाँ आपको कोई कष्ट नहीं होगा । मैं जीवन भर आपकी सेवा करूँगा । माताजी ने कहा कि जब मेरे पास कुछ नहीं रहेगा तो मैं तुम्हारे पास आ जाऊँगी । ऐसा कहकर माताजी वहाँ से प्रयाग स्थित अपने घर वापस आयीं । उस समय प्रयाग से मथुरा तक तूफान एक्सप्रेस नामक एक रेलगाड़ी चलती थी । उसी के द्वारा माताजी बाबा से मिलने के लिए पहली बार यहाँ आई थीं । जब वे यहाँ आयीं तो बाबा को देखते ही वे तो मूर्च्छित हो गयीं । उस समय बाबा मान मन्दिर में रहते थे । उन्होंने माताजी को एक दिन गह्वर वन की कुटी में रखा और अगले दिन उनको विदा कर दिया । उस समय श्रीप्रियाशरण महाराजजी के सम्पर्क में बाबा आ गये थे । उनको बाबा अपने गुरु के रूप में मानते थे । उन्होंने बाबा से कहा – 'रामेश्वर जी ! मैंने सुना है कि आपकी माँ यहाँ आई थीं किन्तु आपने उनको यहाँ टिकने नहीं दिया । यह अच्छी बात नहीं है । माँ के ऋण को तो कोई नहीं चुका सकता है । अगर वे दुबारा आती हैं तो उनको यहाँ रहने दो और उनकी सेवा करो । दुनिया की चिन्ता मत करो कि लोग क्या कहेंगे ?' इसके बाद जब माताजी यहाँ आयीं तो बाबा ने उनको यहाँ कुटी में रखा और स्वयं मान मन्दिर में रहने लगे । सन् १९६२-६३ में बाबा से मिलने के लिए दीदी यहाँ आई थीं । उस समय मैं कक्षा ९ में पढ़ता था । बरसाना में बस स्टैंड के पास एक सन्यासियों की धर्मशाला है, जब दीदी यहाँ आती थीं तो वहीं रुकती थीं क्योंकि गह्वरवन में उनके रुकने का कोई साधन नहीं था ।

एक बार बाबा दीदी को नन्दगाँव का दर्शन कराने के लिए ले गये थे । मैं भी उनके साथ गया था । दीदी ने मुझको मेरे कोर्स का अंग्रेजी का एक पाठ भी पढ़ाया था । उसका नाम था – 'community project' । मेरे विचार से उस समय दीदी विश्वविद्यालय से पढ़ाई कर रही थीं । एक प्रोफेसर थे – दूधनाथ चतुर्वेदी, उनसे दीदी का परिचय था । आगे चलकर दूधनाथ चतुर्वेदी, विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर भी बन गये थे, उनका दीदी से अच्छा सम्बन्ध था । दीदी की इच्छा यही रहती थी कि बाबा किसी प्रकार वापस लौटकर प्रयाग अपने घर आ जायें । इसी उद्देश्य से उन्होंने दूधनाथ चतुर्वेदी को बाबा के पास गह्वरवन में भेजा । वे अपने साथ आठ-दस विद्वान् लेकर यहाँ आये थे । उस समय बाबा कुटी में ही रहते थे । उनके आने के पहले दीदी ने बाबा को एक पत्र लिखा, उसमें उन्होंने कहा था कि ये प्रोफ़ेसर भारत के एक वरिष्ठ विद्वान् हैं । वे तुमसे मिलने के लिए आ रहे हैं, तुम उनसे मिल लेना । दीदी को लगता था कि कहीं ऐसा न हो कि बाबा अपने भजन और वैराग्य के आवेश में उनसे मिलें ही नहीं । दीदी उस समय तक स्वयं प्रोफेसर बन चुकी थीं और कानपुर में डिग्री कॉलेज में पढ़ाती थीं ।

जिस समय दीदी के कहने पर प्रोफ़ेसर दूधनाथ चतुर्वेदी गह्वरवन में आये, उस समय मैं भी कुटी में बाबा के पास था, उन्होंने कुटी का दरवाजा खटखटाया, मैंने ही दरवाजा खोला । कुटी के भीतर एक तख़्त था, उसी पर बाबा बैठते थे । बाबा ने दूधनाथ चतुर्वेदी को तख़्त पर बैठाया, उनके साथ के लोग जमीन पर बैठ गये । दूधनाथ चतुर्वेदी को अपनी विद्वत्ता का बहुत अभिमान था । उन्होंने बाबा से कहा कि आप तो इतने अच्छे परिवार से हैं । आपकी बहन इतनी विदुषी हैं । आपके पिताजी अंग्रेजों के ज़माने में कितने बड़े प्रशासनिक अधिकारी थे । ऐसी स्थिति में आप यहाँ इस कोने में पड़े हुए हैं । आपके अन्दर ऐसी क्या हीन भावनायें हैं ? भारत में बड़े-बड़े सन्त जैसे स्वामी विवेकानन्द और स्वामी रामतीर्थ आदि हुए हैं; इन्होंने विदेशों में भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया । आप भी विदेशों में जाकर यही कार्य कीजिये । इससे हमारे देश का गौरव बढ़ेगा । आपके विदेश जाने का जो भी खर्च होगा, उसे हम लोग वहन करेंगे । वे बाबा को बहुत तरह से उपदेश देते रहे । अन्त में वे बाबा से बोले कि आप प्रचार क्यों नहीं करते हैं ? बाबा महाराज ने बड़े ही नपे-तुले शब्दों में उनसे कहा – 'प्रचार करने की वस्तु नहीं है । यह तो अन्तःकरण की संचरणशील शक्ति का काम है । सूर्य कभी नहीं कहता कि मेरे अन्दर इतना अधिक प्रकाश है किन्तु उसके उदय होते ही सारा अन्धकार दूर हो जाता है ।'

प्रोफेसर साहब ने बाबा से कहा कि आप भ्रमण क्यों नहीं करते हैं ? बाबा ने कहा कि जीव अनादिकाल से इस भवाटवी में भ्रमण कर रहा है । वह अब कहाँ तक भ्रमण करेगा ? अब तो उसको आवश्यकता है 'चिर शान्ति' की और उसकी प्राप्ति एक देशीय होकर ही की जा सकती है । मैं तो आप से भी अनुरोध करूँगा कि आप भी इस 'चिर शान्ति' की प्राप्ति के लिए एक स्थान पर रहकर प्रयास कीजिये । बाबा की बात सुनकर दूधनाथ चतुर्वेदीजी समझ गये कि तर्क में भी इनसे मैं नहीं जीत सकता । अतः वे बोले – 'महाराज जी ! आप पूर्ण हैं, इसीलिए हम लोगों को आपके पास आना पड़ता है ।' जब वे दीनता पर आ गये तो बाबा महाराज ने कहा – 'मैं तो आलसी व्यक्ति हूँ, कहीं जाता नहीं हूँ । यह तो आपका अनुग्रह है कि आप कृपा करके मेरे पास आते हैं ।' इसके बाद प्रोफ़ेसर चतुर्वेदी ने बाबा के बहुत-से फोटो खींचे; उस समय बाबा को देखकर तो ऐसा लगता था कि जैसे साक्षात् स्वामी विवेकानन्द हों ।

जब बाबा प्रयाग में रहते थे और अध्ययन करते थे तो जब उनकी आयु १२ वर्ष थी तभी उनका प्रवेश हाई स्कूल में हुआ किन्तु इतनी कम आयु के कारण उनको हाई स्कूल में प्रवेश से रोक दिया गया था । उस समय दीदी जी के पति कॉलेज के प्रधानाचार्य थे । उन्होंने कहा कि मैं इस बालक की गारन्टी लेता हूँ । इसे हाई स्कूल में प्रवेश दिया जाये क्योंकि यह योग्य है । इस तरह १२ वर्ष की आयु में ही बाबा ने हाई स्कूल कर लिया था ।

श्रीसंत-करुणा

परम पूज्य 'श्रीबाबामहाराज' के सम्बन्ध में श्रीभागवत कथा-व्यास 'श्रीरामजीलाल शास्त्रीजी' द्वारा कथित भावोद्गार (२१ अप्रैल, २०२५)

सन् १९६१-६२ में बाबा गह्वरवन में अपनी कुटी में रहने लगे थे, उस समय मैं भी उनके साथ रहता था । उन दिनों गह्वरवन में पण्डित हरिश्चन्द्र जी और मौनी बाबा जैसे सिद्ध महापुरुष रहा करते थे । पण्डित हरिश्चन्द्र जी महाराज का बड़ा ही तपस्वी जीवन था । वे रात भर जागते थे । वे वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णव थे और सदा ग्रन्थों का पाठ करते रहते थे । वे बहुत बड़े विद्वान् भी थे । उन्होंने बहुत सी रचनाएँ भी की थीं । उनकी एक रचना गोपियों के साथ रास लीला के मध्य श्रीकृष्ण के अन्तर्धान होने के प्रसंग की है । जब गोपियाँ श्रीकृष्ण के विरहावेश में ब्रज के सभी वनों में उनकी खोज कर रही थीं । रंगी त्रिभंगी श्याम के अपांग रंग ध्यान में.....। इस समय गह्वर वन में जो गह्वर वन बिहारी लाल का मन्दिर है, उसके सामने स्थित बड़ी सी बिल्डिंग में ऊपर एक कुटिया में वे रहते थे । बाबा उनके वैदुष्य से प्रभावित थे । मेरे पिताजी का उनसे परिचय था । मैं कभी-कभी उनकी कुटिया में प्रसाद लेने के लिए जाया करता था । उस समय मैं बहुत छोटा था । कभी वे मिश्री दिया करते थे, उनके द्वारा बनायी गयी पंजीरी बहुत स्वादिष्ट होती थी । वे घुटने तक की साफी सी पहनते थे और ऊपर से एक बनियान पहनते थे, वे लम्बे थे । राधा सरोवर के दूसरे कोने में मौनीजीमहाराज रहा करते थे, वे बाबामहाराज का सम्मान करते थे । हमारे घर से उनका सम्पर्क था, वे हमारे घर में हमारी माताजी, हमारी बहिन लक्ष्मी और हमारे छोटे भाई लाला को जानते थे ।

एक बार मौनी बाबा की बाल्टी कुएँ में गिर गयी थी । हमारी कमला भाभी को पता था । उन्होंने मौनी बाबा से पूछा कि बाबा ! आपकी बाल्टी कहाँ है ? उन्होंने संकेत में बताया कि कुएँ में गिर पड़ी है । कमला जी ने एक काँटा मंगवाया और फिर उनकी बाल्टी को कुएँ से निकाला । मौनी बाबा बहुत प्रसन्न हुए ।

सन् १९६१ से तो मैं बाबा महाराज के पास ही उनकी गह्वर वन स्थित कुटी में रहने लगा था । जब बाबा भिक्षा माँगने जाते थे, उस समय मैं कुटी में अकेला रहता था । बाबा गाँव के ब्रजवासियों जैसे भाग सिंह, प्रकाशजी आदि के साथ कबड्डी भी खेलते थे । मानपुर गाँव में वहाँ के ब्रजवासियों को लेकर बाबा कुएँ के पास कीर्तन भी प्रतिदिन करते थे ।

जब बाबा की माताजी यहाँ कुटी में रहने लगीं तो बाबा महाराज ऊपर मान मन्दिर पर चले गये और मैं भी उनके साथ मान मन्दिर में रहने लगा ।

बहुत पहले सन् १९५३-५४ के आसपास बाबा कुछ समय तक गोपाल कुटी में भी रहे थे । उस समय बाबा कुछ समय रहकर फिर ब्रज से चले गये थे । कुछ समय के लिए मोर कुटी में भी रहे थे । कभी-कभी गह्वर वन के रास्ते में ही और विशेषकर रासमण्डल पर बाबा रह जाया करते थे । बाबा के पास कोई सामान नहीं था, केवल एक तानपुरा उनके पास था ।

प्रश्न – प्रियाशरणजी महाराज के प्रति बाबा की श्रद्धा कैसे हुई ?

पण्डितजी – मेरे बाबा के सम्पर्क में आने के पहले ही बाबामहाराज 'प्रियाशरणजीमहाराज' के सम्पर्क में आ गये थे । सन् १९६१ में मैं कक्षा ७ में पढ़ता था । उस समय बाबा ने मुझको एक पाठ पढ़ाया था । संस्कृत में एक पाठ था – **'उत्तमः छात्रः'** । उसमें एक अन्तिम पंक्ति थी – **'साधु भगवन् साधु ! नूनं प्रभूतं नः पुण्यं यद् भवादृशा अस्मान् अनुगृह्णन्तु ।'**

बाबा के द्वारा पढ़ाया गया यह श्लोक मैंने रट लिया । जब प्रियाशरणजी महाराज गाजीपुर में रहते थे तो वहाँ से वे प्रतिदिन टहलते हुए गह्वरवन में आते थे । उनका जब यहाँ से वापस गाजीपुर लौटना होता था और मेरा उधर जाना होता था तो महाराजजी मुझे रास्ते में मिल जाते थे । पहली बार वे मुझे साँकरी खोर के पास मिले थे । बाबा ने मुझसे कहा था कि जब भी तुमको बड़े बाबा मिलें तो यह श्लोक उनके सामने बोलना । इसका अर्थ यह है कि आप मेरे घर आने का अनुग्रह करें । जब मुझे बड़े बाबा महाराज मिले तो मैंने उनको प्रणाम करके यही श्लोक बोला तो उन्होंने मुझसे कहा – 'अच्छा ! यह श्लोक तुमको रामेश्वर जी ने बताया होगा ।' उस समय मैं बाबा का यह नाम जानता नहीं था किन्तु बड़े

बाबा के पूछने पर मैंने कह दिया – 'जी हाँ ।' जब कभी वे मुझे मार्ग में मिल जाते तो मैं उनके चरण स्पर्श किया करता था । एक बार मैं बड़े बाबा को अपने घर में ले आया था । यह घटना सन् १९७० के आसपास की है ।

प्रश्न – बाबा के गुरुदेव का कैसा स्वभाव था ?

पण्डितजी – वे तो फक्कड साधु थे । वे सबको तो फटकारते नहीं थे किन्तु किसी का दबाव वे नहीं मानते थे । वे स्वतन्त्र प्रकृति के और स्पष्टवादी थे । एक बार होली के अवसर पर वे प्रियाकुण्ड पर थे । उसी समय अपने भक्तों को लेकर वहाँ एक प्रसिद्ध महात्माजी आये और वे बड़े बाबा को देखकर जोर-जोर से – 'श्रीकृष्ण ! गोविन्द !! हरे मुरारे !!! हे नाथ ! नारायण !! वासुदेव !!!' .....कीर्तन करने लगे.....। बड़े बाबा अपने भजन में लगे रहे, उन्होंने महात्माजी की ओर कोई ध्यान नहीं दिया; वे बड़े बाबा का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए बारम्बार जोर-जोर से कीर्तन करते रहे परन्तु बड़े बाबा ने उनकी ओर नहीं देखा । अन्त में महात्माजी चले गये । बाबामहाराज ने अपने गुरुदेव से पूछा कि अमुक महात्माजी आये थे, आपका ध्यान खींचने के लिए वे बार-बार कीर्तन करते रहे परन्तु आपने तो उनकी ओर देखा तक नहीं । उन्होंने कहा कि हाँ, मैंने तो उनको पास आने के पहले ही दूर से देख लिया था परन्तु अभी इनमें अहंकार है, इसीलिए मैंने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया ।

प्रश्न – हरगूलालजी कौन थे ? उनका बड़े बाबा से क्या सम्बन्ध था ?

पण्डितजी – हरगूलाल एक सेठ थे । इनकी बड़ी ही विचित्र कहानी है । ये बहुत ही गरीब परिवार के थे । ये केवल सात-आठ साल के छोटे बच्चे थे, तभी इनके घर वालों ने इनको पैसा कमाने के लिए छोड़ दिया था । माता-पिता का इनको कोई प्यार नहीं मिला । ये अपने कन्धे पर एक पेटी रखते थे । उसमें खाली पान, कत्था, चूना, इलायची, तम्बाकू आदि रखते थे । कोई आवाज लगाता कि मेरे लिए चार पान लगाना तो ये उसे पान लगाकर दे देते थे । कोई कहता कि दो पान मेरे लिए लगा दो, कोई कहता कि छः पान मेरे लिए लगा देना । इस तरह ये पेटी में पान रखकर दिन भर घूमा करते थे । एक बार इनकी भेंट एक साधु से हुई । उनको देखकर बालक हरगूलाल ने कहा कि महाराज ! एक पान आप भी ले लीजिये । साधु ने कहा – 'बेटा ! मैं तो पान खाता नहीं हूँ ।' हरगूलाल ने बड़ी दीनता से कहा कि आज खा लीजिये । उसकी दीनता को देखकर साधु ने पान खा लिया किन्तु हरगूलाल से कहा कि यदि मैं तुमसे एक बात कहूँ तो क्या तुम उसको मान लोगे ? हरगूलाल ने कहा – 'हाँ, मान लूँगा ।' साधु ने कहा – 'तुम्हारे जितने भी पान बिकते हैं, मान लो कि सौ पान बिकें तो पाँच पान का पैसा अलग निकालकर रख दो । उसको तुम अपने उपयोग में मत लो, धर्म के काम में लगाओ, साधु सेवा में लगाओ, गो माता की सेवा में लगाओ, मन्दिर की सेवा में लगाओ किन्तु अपने काम में उस पैसे का उपयोग मत करना ।' हरगूलाल ने कहा – 'ठीक है ।' सच्ची श्रद्धा तुरन्त क्रिया में आ जाती है । उसी दिन से हरगूलाल ने साधु के कहे अनुसार पाँच पान का पैसा धर्म के कार्य में लगाना शुरू कर दिया । एक साल में उसकी आमदनी इतनी बढ़ गयी कि उसने एक छोटी सी दुकान खोल ली । आगे चलकर उसने पाँच प्रतिशत की जगह दस प्रतिशत धन धर्म के कार्य में लगाना आरम्भ कर दिया । इससे उसकी और अधिक आर्थिक वृद्धि हुई । वह अधिक प्रगति करता गया । उसकी दुकान भी बड़ी हो गई । बड़ी दुकान होने पर उसने दस प्रतिशत के स्थान पर पच्चीस प्रतिशत धन धर्म के कार्य में लगाना आरम्भ किया । साल-दो साल के भीतर उसका धन इतना अधिक बढ़ गया कि उसने एक छोटी सी फैक्ट्री खोल ली । जब धन अधिक बढ़ गया तो उसने पचास प्रतिशत अपना पैसा धार्मिक कार्यों में लगाना शुरू किया । इसी पैसे से हरगूलाल ने बरसाने में श्रीजी का मन्दिर बनवाया । वृन्दावन में टी.बी. अस्पताल बनवाया । नन्दगाँव, बरसाना के मन्दिरों में तथा वृन्दावन के बाँके बिहारी मन्दिर में आज तक जो ठाकुरजी का भोग लगता है, वह हरगूलाल के जमा पैसे के ब्याज से लगता है । आगे चलकर हरगूलाल ने श्रीप्रियाशरणजी महाराज की भी सेवा की । वे शरीर के स्वास्थ्य हेतु दौड़ भी लगाते थे, इसलिए हरगूलाल ने उनके लिए खाने-पीने की अच्छी व्यवस्था कर दी थी । यह देखकर निंदक लोग बड़े बाबा की आलोचना करने लगे । वे कहीं जाते तो कुछ लोग कहने लगते कि देखो, हरगूलाल का बिजार

(सांड़) जा रहा है । बाद में हरगूलाल वृन्दावन के टटिया स्थान से गुरु दीक्षा लेकर रसिक बन गये तो उनमें संकीर्णता आ गयी और वे वृन्दावन और शेष ब्रज (नन्दगाँव-बरसाना) में भेद करने लगे, वहाँ के ब्रजवासियों में अभाव करने लगे । जब प्रिया शरण महाराजजी ने हरगूलाल का ब्रजवासियों के प्रति अनुचित व्यवहार देखा तो उन्होंने एक दिन उससे कहा – 'देख, जब पहली बार मैं तेरे पास आया था तो मेरे पास यह कौपीन थी, अब यही कौपीन पहनकर मैं जा रहा हूँ । मैं आज से तेरा त्याग करता हूँ ।' ऐसा कहकर उसी समय बड़े बाबा ने हरगूलाल का त्याग कर दिया । बरसाने के श्रीजी मन्दिर बनवाने की प्रेरणा हरगूलाल को बड़े बाबा ने ही दी थी ।

प्रश्न – बाबा महाराज और उनके गुरुदेव श्रीप्रियाशरणजी महाराज के आपसी सम्बन्ध के बारे में कुछ बताइए ।

पण्डितजी – बाबा के कुछ निन्दक लोग प्रियाशरणजी महाराज को बाबा के विरुद्ध भड़काते रहते थे, उनकी झूठी निन्दा किया करते थे । सन् १९६२ में बाबा ने संस्कृत का अध्ययन करना आरम्भ कर दिया था किन्तु उनके गुरुदेव बड़े बाबा को यह ठीक नहीं लगा । उन्होंने बाबा को संस्कृत का अध्ययन करने के लिए मना किया और कहा कि अभी जो तुम्हारा सुन्दर आराधनामय जीवन चल रहा है, यह नहीं चल पायेगा और इससे तुम्हारा अखण्ड ब्रजवास भी नहीं हो पायेगा परन्तु बाबा महाराज का लक्ष्य तो कुछ और था, वे श्रीमद्भागवत पर अष्टाचार्यों की टीका का अध्ययन करने के लिए संस्कृत का अध्ययन करना चाहते थे । उनका लक्ष्य संस्कृत का अध्ययन करके कथा करके धन का अर्जन करना नहीं था । बड़े बाबा ने सन् १९६२ से लेकर सन् १९७६ तक बाबा महाराज से संस्कृत का अध्ययन करने के कारण बात नहीं की । बाबा महाराज बड़े बाबा का दर्शन करने जाते थे और उनको प्रणाम करके चले आते थे ।

श्रीबाबा ने गोवर्धन में मैना वाली धर्मशाला में श्रीमद्भागवत सप्ताह कथा की थी । उस कथा का आयोजन संतोष और उनके माता-पिता ने किया था । यह सन् १९७८-७९ की घटना है । उस समय बड़े बाबा श्रीप्रियाशरण जी महाराज गोवर्धन में ही रहा करते थे । सप्ताह कथा आरम्भ होने के पूर्व बाबा महाराज अपने गुरुदेव के पास गये और उनसे कहा कि यहाँ के भक्तों के अनुरोध से मैं यहाँ मैना वाली धर्मशाला में भागवत सप्ताह कथा करने जा रहा हूँ । बड़े बाबा रुष्ट तो थे ही, उन्होंने बाबा से कहा कि तू तो अब विद्वान् हो गया है । उन्होंने बाबा को श्रीराधासुधानिधि के श्लोक ९७ – 'या वाराधयति.....' का अर्थ करने को कहा । श्रीबाबा ने इस श्लोक के तीन-चार अर्थ किये । मैं भी उस समय वहाँ उपस्थित था । बाबा के द्वारा किये गये अर्थ से बड़े बाबा महाराज बहुत अधिक प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने मुख द्वारा चबाया हुआ पान का बीड़ा बाबा को दिया और उनके गले में एक माला भी पहनायी तथा उनकी प्रशंसा भी की । उन्होंने बाबा से कहा कि तुम्हारा संस्कृत का अध्ययन करना सार्थक हो गया ।

एक बार बाबा महाराज अलवर में प्रचार की दृष्टि से गये थे । वहाँ उन्होंने कई जगह व्याख्यान दिए थे । उनके प्रवचनों से लोग इतना प्रभावित हुए कि उनके पीछे-पीछे दौड़ा करते थे । जब बाबा मान मन्दिर वापस आ गये तो उनके पास अलवर के बहुत से भक्तों के पत्र आये थे । बाबा मानमंदिर के रास मण्डल पर बैठकर उनके पत्रों को पढ़ रहे थे और उनका उत्तर लिख रहे थे । इतने में ही बड़े बाबा महाराज टहलते हुए वहाँ आये । उन्होंने बाबा से पूछा कि ये क्या हो रहा है ? बाबा ने कहा कि मैं अलवर गया था, वहाँ के भक्तों के पत्र आये हैं, उसमें उन्होंने अध्यात्म से सम्बन्धित प्रश्न पूछे हैं तो मैं उनके पत्रों का उत्तर लिख रहा हूँ । बड़े बाबा ने कहा कि ऐसा करने से तू ब्रजवास नहीं कर पायेगा । अधिक लोगों के साथ सम्पर्क रखने से अखण्ड ब्रजवास करने में बाधा उत्पन्न होती है । बड़े बाबा की ऐसी बात सुनने पर बाबा महाराज ने उनके सामने ही सभी पत्रों को फाड़कर फेंक दिया और उसी समय बाबा ने यह नियम लिया कि आगे से मैं किसी को पत्र नहीं लिखूँगा, ब्रज के बाहर कभी नहीं जाऊँगा तथा ब्रजवासियों की भिक्षा की रोटी ही खाऊँगा ।

प्रश्न – सखीशरणजी महाराज के बारे में कुछ बताइए ।

पण्डितजी – सखीशरण महाराज जी रास लीला के स्वरूपों के बड़े ही प्रेमी थे । चिकसौली के मुरारीलालजी 'बाबा महाराज' के सम्पर्क में थे, उन्होंने बाबा से संगीत भी सीखा था । भविष्य में वे रासमण्डली के स्वामी बन गये,

सखीशरणजी उनकी रासमण्डली के सदस्यों की भी सेवा करते थे । मुरारीलालजी की ही प्रेरणा से सखीशरणजीमहाराज वृन्दावन से बाबा महाराज के पास बरसाना में आये । बरसाना बाबा महाराज के पास आने से पहले सखीशरणजी विकट प्रेत-बाधा से त्रस्त थे । वह प्रेत सखीशरणमहाराज के आँखों की पलकों को नोच लेता था । उस समय वे करहला गाँव में रहा करते थे । उनकी बाबा महाराज में बड़ी श्रद्धा थी । वे बाबा को श्रीबाबा कहकर सम्बोधित किया करते थे । उस समय गह्वरवन स्थित कुटी में सखी शरण महाराज आये और उन्होंने कहा – 'श्रीबाबा ! मैं करहला में भजन करता हूँ तो एक प्रेत मेरी आँखों की पलकों को नोचता है ।' उस समय बाबा महाराज ने उनसे यही कहा कि तुम करहला छोड़ दो, यहीं गह्वरवन में वास करो और हमारी कुटी में रहो । जब भी प्रेत-बाधा उत्पन्न करे तो उस समय तुम मुझे बताना । बाबा महाराज के कहने पर सखीशरणजी गह्वरवन में कुटी में रहने लगे । जब प्रेत आया और बाधा करने लगा तो उन्होंने कहा – 'श्रीबाबा ! प्रेत आ गया ।' बाबा महाराज ने जोर से चिल्लाकर कहा – 'कहाँ है प्रेत ?' जैसे ही बाबा ने कठोरता के साथ कहा, उनकी आवाज को सुनकर प्रेत गायब हो गया और दुबारा फिर कभी सखी शरण महाराज के पास नहीं आया । सखीशरणजी अब तो बाबा महाराज के प्रति अत्यन्त श्रद्धावान होकर गह्वर वन में रहने लगे और उन्होंने बाबा महाराज की बहुत सेवा की । सखीशरणजी मेरी भी बहुत सेवा किया करते थे । उन दिनों मैं कक्षा ८ या ९ में पढ़ता था । उस समय वे मेरे कपड़े धो दिया करते थे । मुझे कपड़े नहीं धोने देते थे । उनकी मेरे प्रति ऐसी भावना थी कि ये ब्रजवासी हैं, बाबा महाराज के पास रहते हैं और बाबा की इनके ऊपर बड़ी कृपा है । वे मेरा बहुत सम्मान करते थे । वे आयु में बाबा महाराज से एक-दो साल बड़े थे ।

प्रश्न – श्रीबाबा महाराज में आपने ऐसी क्या विशेषता देखी कि सब तरह से उन्हीं की शरण में आ गये ?

पण्डितजी – एक बार जब मैं बाबा के सम्पर्क में आया तो सदा उन्हीं के आश्रय में रहा । उनको छोड़कर अन्यत्र नहीं गया । आज ही बाबा मुझसे कह रहे थे कि तुम्हारी माँ यमुनाजी कहाँ हैं ? मैंने कहा कि बाबा उनको पधारे तो २३ साल बीत गये । बाबा ने कहा कि उनको बुलाओ । मैंने कहा कि बाबा मेरे बुलाने से तो वे नहीं आयेंगी । यदि आप बुलायेंगे तो वे आ जायेंगी ।

प्रश्न – दिल्ली की ऊषाजी के माता-पिता बाबा महाराज के सम्पर्क में कैसे आये ?

पण्डितजी – ऊषा बड़ी भक्त महिला थीं । बाबा को वे आपश्री के अलावा कोई दूसरा शब्द नहीं कहती थीं । उनके माता-पिता बाबा प्रिया शरण महाराज जी से परिचित थे । उन्होंने बाबा के साथ उनका घनिष्ठ सम्बन्ध देखा तो फिर वे बाबा से जुड गये, उनसे बहुत प्रेम करते थे और प्रायः दिल्ली से मान मन्दिर आते रहते थे ।

बाबा तो अपने पास कभी पैसा नहीं रखते थे किन्तु यदि कोई उनके पास पैसा चढ़ा जाए तो मैं उसका प्रबन्धक था । ऊषा के माता-पिता सन् १९६० में एक बार बाबा को सौ रुपये का नोट देकर गये थे । उस समय सौ रुपये का नोट चौड़ा सा होता था । उसको लेकर मैंने बाबा के कमरे में एक लकड़ी के गार्टर के नीचे रख दिया था । उसी के नीचे मैं बाबा को अर्पित किये गये पैसे को रखता था । उस समय तक बाबा की माताजी यहाँ नहीं आई थीं । वे तो प्रयाग में ही थीं । उनका बड़ा प्रयास रहता था कि बाबा किसी प्रकार ब्रज छोड़कर प्रयाग चले जाएँ । राम प्रसाद दीक्षित प्रयाग में डिस्ट्रिक्ट जज थे, उसके बाद वे हाई कोर्ट में रजिस्ट्रार बने, बाद में वे सुप्रीम कोर्ट में चले गये । उन्होंने ही मेरी सर्विस लगवाई थी । सन् १९६०-६१ के आसपास वे, राधा बाबा और भाईजी श्रीहनुमान प्रसाद पोद्दार जी – ये तीनों व्यक्ति बरसाना में आये थे । बाबा की माताजी का दीक्षित जी से परिचय था । जब दीक्षित जी राधा बाबा और भाई जी के साथ श्रीजी मन्दिर पहुँचे तो उन्होंने अपने आगमन की सूचना बाबा को भिजवा दी । उस समय बाबा मान मन्दिर में ही रहते थे । श्रीजी मन्दिर से कोई व्यक्ति बाबा के पास आया था बताने के लिए कि दीक्षित जी आये हैं, उनके साथ राधे बाबा और भाई जी भी आये हैं । सूचना मिलने पर बाबा महाराज श्रीजी मंदिर उनसे मिलने के लिए गये थे । भाईजी श्रीहनुमानप्रसाद पोद्दार जी ने बाबा से कहा कि कुछ सुनाओ । उनके कहने पर बाबा महाराज ने सम्पूर्ण राधासुधानिधि

उन्हें सुनाई । बाबा को सुधानिधि के सारे श्लोक कंठस्थ थे । बाबा की भावपूर्ण वाणी से सुधानिधि के श्लोकों को सुनकर राधा बाबा और भाई जी के नेत्रों से अश्रु प्रवाहित होने लगे । ऐसी स्थिति में दीक्षित जी और भाई जी का बाबा से प्रयाग चलने के लिए कहने का साहस नहीं हुआ । भाईजी ने बाबा से कहा कि तुम्हें किसी चीज की आवश्यकता हो तो बताओ । बाबा ने कहा कि आप मुझे श्रीमद्भागवत पर अष्टाचार्यों की टीका उपलब्ध करा दीजिये । यहाँ से जाने के बाद भाई जी ने डाक के द्वारा अष्टाचार्यों की टीका बाबा को भिजवाई थी । वह टीका यहाँ आने पर बाबा ने उत्सव मनाया था ।

दक्षता व सहिष्णुता

परम पूज्य 'श्रीबाबामहाराज' के सम्बन्ध में श्रीभागवत कथा-व्यास 'श्रीरामजीलाल शास्त्रीजी' द्वारा कथित भावोद्गार (२१ अप्रैल, २०२५)

एक बार गह्वरवन के एक संत ने बाबा महाराज से कहा कि आज तक आपने कभी भी संतों का भण्डारा नहीं किया । अब एक भण्डारा तो आपको करना ही पड़ेगा । हम लोग भी उसमें सहयोग करेंगे । बाबा ने कहा कि ठीक है । एक सूची बनायी जाए । सूची बनायी गयी । अब खीर बनाने के लिए काजू, किशमिश आदि कई पदार्थों की आवश्यकता पड़ती है तो बाबा सूची में उनका नाम बताते गये । उन्होंने कहा कि सौ ग्राम की जगह डेढ़ सौ ग्राम कर दो । दो सौ ग्राम की जगह ढाई सौ ग्राम कर दो । सूची बनने पर बाबा ने उन संतों से कहा कि भण्डारे के लिए बाकी सब व्यवस्था हम कर देंगे, केवल पैसे की व्यवस्था आप लोग कर देना । अब तो सारा मामला ठप हो गया ।

जब मैं दिल्ली में सर्विस करता था तो वहाँ मेरा मन नहीं लगता था, मैंने इस बारे में बाबा से कहा तो उन्होंने कहा कि तुम वह नौकरी छोड़ दो । यह सन् १९७१ की बात है । बाबा के कहने पर मैंने वह नौकरी छोड़ दी । आगे चलकर घर में बहुत समस्यायें भी आयीं । मेरी बहन लक्ष्मी (लच्छो) का अपहरण भी हुआ किन्तु बाबा महाराज की कृपा से अपराधियों को सजा मिली, उन्हें गिरफ्तार किया गया ।

एक बार हमारे घर में रात को सेंध लगाकर चोर भैंस को चुराकर ले गये । उस समय मैं बाबा महाराज के पास मान मंदिर में रहता था । उन्होंने मुझसे कहा कि तुम अपने घर में सोया करो किन्तु मेरी माताजी ने मना कर दिया । उन्होंने मुझसे कहा कि ठाकुरजी रक्षा करेंगे, तुम बाबा के पास मन्दिर में ही रहो । माताजी ने अत्यन्त विषम परिस्थिति आने पर भी कभी ऐसा नहीं कहा कि तुम घर में आकर रहो । उनकी बाबा महाराज के प्रति अगाध श्रद्धा थी ।

प्रश्न – जब आप मानमंदिर में रहते थे तो उस समय बाबा की दिनचर्या कैसी रहती थी ? उन्होंने संस्कृत का भी अध्ययन किया था, उसके बारे में बताइए ।

पंडितजी – बाबा ने गाजीपुर संस्कृत विद्यालय से उत्तर मध्यमा तक संस्कृत की शिक्षा ग्रहण की । उस समय काशीनाथ जी विद्यालय के इन्चार्ज थे । वे बड़े विद्वान थे । बाबा तीन साल के कोर्स को एक महीने में तैयार कर लेते, फिर काशीनाथ जी से कहते थे कि आगे और बता दीजिये । एक दिन वे बाबा पर झुंझला गये और बोले – 'महात्माजी ! जो मैं आपको पढ़ा रहा हूँ, उसको पूरा करने में वर्षों लग जाते हैं । आप कहते हैं कि मुझे आगे और बता दो । अभी तक मैंने जो कुछ भी पढ़ाया है, क्या वह सब आपको याद है ?' उन्होंने जो कुछ भी पूछा, बाबा ने सब कुछ बता दिया । वे तो बाबा की प्रतिभा का लोहा मान गये और बोले आज तक मैंने ऐसा कोई विद्यार्थी नहीं देखा जो संस्कृत की शिक्षा के इतने कठिन कोर्स को इतनी जल्दी तैयार कर ले । अब उनके सामने एक खतरा उत्पन्न हो गया । काशीनाथ जी के एक साले परीक्षा दे रहे थे । उसे वे दिन-रात बड़े परिश्रम से पढ़ाते थे । बाबा तो थोड़ा सा बताने पर ही बाकी सब स्वयं तैयार कर लेते थे और इस प्रकार बाबा ने परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त किये और उनको स्कॉलरशिप मिली, एक तो राष्ट्रीय स्तर की स्कॉलरशिप और एक क्षेत्रीय स्तर की । वह सब बाबा ने काशीनाथ जी को प्रदान कर दी । इस तरह उनके अध्यापक भी बाबा का बड़ा सम्मान करते थे ।

आगे चलकर संस्कृत की और अधिक उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए बाबा वृन्दावन में गये और वहाँ निम्बार्क विद्यालय में प्रवेश लिया । झा जी उस विद्यालय के प्रधानाचार्य थे । यह सन् १९६४-६५ की घटना है । उस समय मैं भी वृन्दावन अध्ययन करने के लिए गया था तो मैं भी झा जी से मिला । मैंने झा जी से संस्कृत में बोलना शुरू किया । बाबा महाराज की कृपा से मुझे संस्कृत का बहुत अच्छा अभ्यास हो गया था, जबकि मैं विज्ञान का विद्यार्थी था । जब मैं झा जी से संस्कृत में बोला तो उनको बड़ा विचित्र लगा । मैंने बाबामहाराज के बारे में बात की तो झाजी ने कहा कि उनको वृन्दावन ले आओ । उन्होंने सलाह दी कि बाबा को अब संस्कृत व्याकरण के स्थान पर संस्कृत में दर्शन शास्त्र का अध्ययन करना चाहिए । निम्बार्क आश्रम के एक व्यक्ति थे गोविन्द शरण जी, वे मुझसे बहुत प्रेम करते थे । उन्होंने विज्ञान से इन्टर की शिक्षा प्राप्त की थी । वे बाबा के साथ ही संस्कृत पढ़े थे । वे वृन्दावन की नाक थे । उन्होंने भी बाबा के साथ दर्शन शास्त्र से संस्कृत की परीक्षा दी थी । जब परीक्षा हुई तो पेपर इतना कठिन था कि अध्यापक लोग अपने विद्यार्थियों की मदद करने लगे । गोविन्द शरण जी के पास उनके परिचित शिक्षक पुस्तक लेकर मदद के लिए पहुँचे, बाबा के पास भी पुस्तक लेकर शिक्षक गये किन्तु बाबा ने पुस्तक की सहायता से नकल करने से स्पष्ट मना कर दिया । उन्होंने कहा कि मुझे नकल नहीं करना । नकल न करने से मैं फेल ही तो हो जाऊँगा, हो जाने दो । मैं तो साधु हूँ । मुझे कोई नौकरी तो करनी नहीं है । इस तरह बाबा महाराज ने नकल के लिए मदद दिए जाने पर भी नकल नहीं की । जब परीक्षा का परिणाम आया तो बाबा ने ही सबसे अधिक अंक प्राप्त किये । वहाँ से भी बाबा को राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर की स्कॉलरशिप प्राप्त हुई । उन्होंने उसे झा जी को दे दी । वृन्दावन के उस निम्बार्क विद्यालय में बाबा महाराज का बड़ा दबदबा था । उस विद्यालय के सामने एक बिहारी जी का बगीचा है । वहाँ पर एक कुण्ड है । बाबा महाराज जाड़े के दिनों में प्रातःकाल उठकर उस कुण्ड के शीतल जल में स्नान करते थे । इस बात से भी वहाँ के लोग बड़े ही प्रभावित थे । जब बाबा अपने कमरे से निकलते थे तो वहाँ के सभी अध्यापक चौकन्ने हो जाते थे । एक-डेढ़ महीने तक बाबा वृन्दावन में रहते थे और फिर अध्ययन करके बरसाना वापस आ जाते थे । बाबा मान मंदिर की दीवारों पर कोयले से श्लोक लिखा करते थे । उन दिनों बिजली का प्रबंध तो था नहीं, इसलिए बाबा दीपक के प्रकाश में पढ़ा करते थे । उस समय सखी शरण जी बाबा की सेवा में रहते थे । आधी रात को गह्वर वन की अपनी कुटी से वे मधुकरी की रोटी और बाल्टी में पानी लेकर बाबा के पास मान मंदिर आया करते थे । जब तक बाबा महाराज प्रसाद नहीं पा लेते थे, सखीशरणजी जागते रहते थे ।

प्रश्न – गह्वरवन के संतों ने बाबा से विरोध किया, गिरिराजजी की शिला पर हाथ रखकर सौगन्ध खायी कि हम लोग बाबा को मान मन्दिर से निकालकर दम लेंगे, इसके बारे में थोडा बताइए ।

पंडितजी – लोगों के भड़काने पर इन संतों ने बाबा का विरोध किया । बाबा को बदनाम करने के लिए इन लोगों ने एक परचा छपवाया, जिसका शीर्षक था – कालनेमि राक्षस 'रमेश' । गाँव के लोगों ने उनका सहयोग किया । उसमें बाबा महाराज के सभी भक्तों पर भी झूठे आरोप लगाए गये थे । भैयाजी के पिताजी प्रकाश जी पर आरोप लागाये गये थे । सखी शरण जी के बारे में लिखा था - 'सखी शरण – झाड़ी में छिपा हुआ एक खूँखार भेड़िया ।' मेरे विरोध में भी कुछ लिखा था । बाबा महाराज कहते हैं कि वह परचा हम लोगों से खो गया, उसको सम्भालकर रखना चाहिए था । उस पर्चे को सभी जगह वितरित किया गया था । प्रकाश जी तो इतने भयभीत हो गये थे कि बाजार से होकर निकलने का उनका साहस नहीं होता था । राधाकान्तजी बड़े ही निर्भीक थे । वे अपयश से बिल्कुल भी नहीं भयभीत होते थे । हमारी भाभी कमला भी बड़ी साहसी थीं । वे भी किसी से भयभीत नहीं होती थीं । उन दिनों वे बाबा में बड़ी श्रद्धा रखती थीं ।

मौनी बाबा के गोलोकवास होने के उपलक्ष्य में बाबा महाराज ने सन् १९७६ में गह्वरवन में भागवत सप्ताह की थी । उसका भी साधुओं ने बहुत विरोध किया । पूरे बरसाने में सब जगह जाकर ये लोग बाबा का विरोध करते रहे कि इनको भागवत कथा कहने का अधिकार नहीं है । इनसे वरिष्ठ विद्वान् हैं, उनके रहते ये क्यों भागवत सप्ताह कर रहे हैं ?

इन विरोधियों को यह भय था की यदि रमेश बाबा भागवत कथा कह लेंगे तो हम लोगों की तो सारी प्रतिष्ठा ही समाप्त हो जायेगी, फिर हमें कौन पूछेगा ? दो-चार विरोधी साधुओं ने बाबा द्वारा भागवत कथा करने के विरोध में गाँव-गाँव में जाकर प्रचार किया, लोगों से कहा कि इनकी कथा में मत जाना । वह तो निगुरा है, उसका कोई गुरु नहीं है । ऐसे व्यक्ति के मुख से भागवत नहीं सुनना चाहिए । हालाँकि ब्रजवासी इन सब बातों से कोई मतलब नहीं रखते, फिर भी बाबा का विरोध किये जाने पर उन्होंने सोचा कि चलो, देखें, कैसी कथा हो रही है ? संत लोग कह रहे हैं तो अवश्य ही वहाँ जाना चाहिए । एक बार जब ब्रजवासी बाबा की कथा में आये तो उन्होंने कहा कि अरे, यह तो बहुत जोरदार कथा है । दूसरे पंडितों की कथा तो समझ में नहीं आती है किन्तु ये बाबा तो ऐसी कथा कह रहे हैं जो हम लोगों को अच्छी तरह समझ में आ रही है । इनकी एक-एक बात हमारी समझ में आ रही है । अब तो गह्वरवन में बाबा की कथा सुनने के लिए ब्रजवासियों की बहुत बड़ी भीड़ एकत्रित हो गयी । बरसाने के विरोधी कथावाचक भी आये कि देखें यह हमारे सामने क्या कथा कहेगा ? उन लोगों ने बाबा की कथा में कमी निकालने का बहुत प्रयास किया किन्तु उन्हें एक भी कमी नहीं दिखाई दी । इस तरह विरोधियों के अनेक प्रयत्नों के बावजूद भी बाबा महाराज की यह कथा अत्यधिक सफल हुई ।

बाबा ने भैयाजी के घर में बहुत सुन्दर कथा की थी । भागवत के वेणुगीत के एक ही श्लोक **"बर्हापीडं नटवर वपुः..... "** की छः महीने तक व्याख्या की थी । इस कथा में श्रोताओं की बहुत भीड़ होती थी । विरोधी लोगों को यह बात पसंद नहीं थी ।

इसी प्रकार मान मंदिर में रात को जो कीर्तन होता था । उसमें छत पर खड़े होकर काँसे के बहुत भारी बेला बजाये जाते थे । उसकी ध्वनि बरसाने से १८ किलोमीटर दूर स्थित नीमगाँव तक सुनाई पड़ती थी । विरोधियों को यह सब ठीक नहीं लगा तो ये पुलिस वालों को लेकर मान मन्दिर आये । उस समय कोई गाड़ी तो मान मन्दिर तक जा नहीं सकती थी, अतः पुलिस वाले पैदल ही मन्दिर में आये । उस समय मान मन्दिर में बीच में एक रासमण्डल था । उस पर बहुत जोर से कीर्तन होता था । जब कीर्तन अपने चरम बिंदु पर पहुँचा तो सभी ब्रजवासी उछल-उछलकर नाचने लगे । पुलिस वालों ने देखा कि यहाँ का वातावरण तो ऐसा है कि सभी कीर्तन में मग्न हो रहे हैं, सभी नाच-गा रहे हैं, उन्हें अपने शरीर की भी सुध नहीं है । सब स्थिति को देखकर पुलिस वालों ने विरोधियों को बहुत फटकारा और कहा कि क्या तुम लोगों ने हमें वहाँ मरवाने के लिए भेजा था ? विरोधियों ने पुलिस से शिकायत की थी कि ये लोग दिन में तो चोरी करते हैं और रात को कीर्तन में ढोलक बजाकर 'मारो साले को' – ऐसा प्रचार करते हैं । पुलिस वालों ने जब यहाँ प्रत्यक्ष आकर देखा तो उनको ऐसा कुछ भी गलत कार्य होते नहीं दिखाई दिया ।

जब हम लोगों के समक्ष बहुत से संकट आते थे तो बाबा महाराज मुझसे कहते थे कि पाठ करो । **'नारायण कवच'** का भी पाठ करने के लिए बाबा मुझसे कहते थे ।

प्रश्न – आप तो पहले अध्ययन करते थे, बाद में आप शिक्षक भी बने परन्तु आगे चलकर आप भागवत-व्यास कैसे बने ?

पंडितजी – श्रीबाबा महाराज ने ही मुझसे कहा था कि तुम अब भागवत कथा करो । हाई स्कूल तक मैंने संस्कृत पढ़ी थी किन्तु इन्टर विज्ञान से किया था, उसमें संस्कृत मेरे कोर्स में नहीं थी । उसके बाद बी. एस. सी. किया, उसमें संस्कृत पढ़ने का कोई प्रश्न ही नहीं था । इसके बाद एम.एस.सी. किया, उसमें भी संस्कृत पढ़ने का कोई अवसर नहीं था । संस्कृत की मेरी योग्यता तो केवल हाई स्कूल की ही थी, तब मैंने बाबा से संस्कृत का अध्ययन किया था । बाबा महाराज ने कहा कि तुम संस्कृत में भागवत कहो । इधर मेरा जीवन बड़ा ही कष्टप्रद रहा है । स्कूल में पढ़ाने के लिए मैं घर से प्रतिदिन ७० किमी. दूर साइकिल से जाता और आता था । भागवत कथा की तैयारी के लिए मैं पहले गीताप्रेस की भागवत से संस्कृत का श्लोक पढ़ता और बाद में उसके हिन्दी अर्थ को पढ़ता था । बाद में बाबा की कृपा से कथा कहना सरल हो गया; बाबाश्री की हार्दिक इच्छा थी कि संसार में निष्काम भाव से भागवत-कथा को कहा जाय, जिससे लोगों का वास्तविक कल्याण हो सके; हमने बाबा की भावनानुसार ही देश-विदेश में विशुद्ध भागवत कथा का प्रचार-प्रसार किया, जिसमें कभी

भी किसी प्रकार की याचना नहीं की, बाबा की समस्त भावनाओं को हर तरह से पूर्ण करने का पूरा-पूरा प्रयास करते हैं । 'श्रीबाबा' के श्रद्धावान कथा-व्यास भी निष्किंचन भाव से ही देश-विदेश में कथा कहते हैं बाबा की समस्त भावनाओं को हर तरह से पूर्ण करने का पूरा-पूरा प्रयास करते हैं ।

बाबा महाराज ने संकट में हम लोगों की सहायता के लिए क्या-क्या नहीं किया ? जैसे ठाकुरजी संकट में हर कदम पर अपने भक्तों की रक्षा करते हैं, उसी प्रकार श्रीबाबा महाराज भी संकट की हर घड़ी में सदा हम लोगों के सहायक बने रहे ।

एक बार प्रसिद्ध उद्योगपति विष्णु हरि डालमिया बाबा महाराज के पास मान मंदिर में आये और बोले कि यदि महाराज जी आज्ञा कर दें तो मैं इस मन्दिर का पुनर्निर्माण करवा दूँ किन्तु बाबा महाराज ने उसके इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया ।

समर्पणभाव से सच्ची रक्षा

परम पूज्य 'श्रीबाबामहाराज' के सम्बन्ध में श्रीभागवत कथा-व्यास 'श्रीरामजीलाल शास्त्रीजी' द्वारा कथित भावोद्गार (२१ अप्रैल, २०२५)

प्रश्न – गह्वरवन की सुरक्षा के लिए जो संघर्ष चला, उसके बारे में संक्षेप में बताइये ।

पंडितजी – मान मंदिर में बाबा के संरक्षण में बहुत से बालक थे, उनका बहुत बड़ा समुदाय था । इसमें अधिकतर बालक चिकसौली और मानपुर गाँवों के थे । ये बालक बड़े ही उत्साही और वीर थे । ये अपने खून से हस्ताक्षर किया करते थे, मरने-मिटने के लिए तैयार रहते थे । इनके घर वाले भी इनके विरोधी बन गये थे । ये बालक दिन-रात कीर्तन करते थे, पद गाते थे । जो भी गह्वरवन को काटने के लिए आता, पशुओं को चराने के लिए आता, ये बालक उसकी पिटाई कर दिया करते थे । गाँव का एक व्यक्ति गह्वरवन में अपनी भेंड़-बकरियाँ चराने के लिए लाता था, लताओं को भी काटता था, इन बालकों ने उसकी पिटाई कर दी । लोगों के अन्दर इस बात का भय था कि यदि हमने गह्वरवन में पशुओं को चराया तो हमारी पिटाई हो जाएगी । चिकसौली के ज्ञानीजी को तो उनके घर वालों ने कुएँ के भीतर उल्टा लटका दिया था कि तू मानमंदिर नहीं जाएगा परन्तु वे जब तक जीवित रहे, अपने अंतिम समय तक मानमंदिर आते रहे । उनके घर वालों ने उनको स्कूल में पढ़ाने से इनकार कर दिया, फिर ये बाबामहाराज की सहायता से वृन्दावन में रहे, वहाँ श्रीवनमहाराज के विद्यालय में इन्होंने पढ़ाई की । वनमहाराज और इस्कॉन के संस्थापक प्रभुपादजी गुरुभाई थे । वन महाराज ने वृन्दावन में Indian oriental philosophy के नाम से एक कॉलेज की स्थापना की थी । चिकसौली गाँव के ज्ञानीजी इसी कॉलेज में पढ़े थे ।

बाबा महाराज ने मान मंदिर में रहने वाले बालकों को गह्वरवन की सुरक्षा के लिए नियुक्त कर दिया था । गह्वरवन में एक महात्मा रहते थे – गोवर्धनदासजी, वे बाबा से बड़ा प्रेम करते थे । वे पढ़े-लिखे नहीं थे किन्तु चरित्र के बहुत अच्छे थे । वे भी गह्वरवन की रक्षा करते थे । कोई यदि गह्वरवन में लकड़ी काटने के लिए आता तो उसको फटकारते थे और उसका सामान भी छीन लेते थे । इस कारण से उनका भी लोग विरोध करते थे लेकिन विरोधियों की कुछ चलती नहीं थी क्योंकि श्रीबाबा गह्वरवन की रक्षा करने वालों का समर्थन करते थे ।

उस समय जो चिकसौली का प्रधान था, वह बड़ा ही निकम्मा और भ्रष्ट था । वह बड़ा ही दबंग था और उसका काफी प्रभुत्व था । उन दिनों दोहनी कुण्ड के चारों ओर सैकड़ों कदम्ब के पेड़ थे । इस प्रधान ने इन कदम्ब वृक्षों को कटवाकर बेच दिया । उस समय मैं प्राइमरी में पढ़ता था । दोहनी कुण्ड स्वच्छ जल से भरा रहता था । घाट की ऊपरी सीढ़ियों तक पानी बहता रहता था । हमारी माताजी कपड़े धोने दोहनी कुण्ड जाया करती थीं ।

प्रश्न – विरोधियों द्वारा बाबा महाराज के विरुद्ध और क्या-क्या अपराध किये गये ?

पंडितजी – एक बार बरसाना से ५० लड़के मान मंदिर में आये, उनमें गोस्वामी परिवारों के भी लड़के थे । उन्होंने सोचा कि पचास की संख्या तो बहुत होती है, इसलिए मान मंदिर में जितने भी लोग होंगे, उन्हें हम लोग पीट कर आयेंगे ।

प्रश्न – बरसाने से बाबा महाराज से प्रेम करने वाला परिकर कौन है ?

पंडितजी – जो वहाँ के वयोवृद्ध लोग थे, वे बाबा से प्रेम करते थे जैसे गोपीचन्द्र गोस्वामी, राम भरोसे लीलाधर – ये बाबा से पढ़ने के लिए मान मंदिर आते थे, उस समय ये इन्टर की पढ़ाई कर रहे थे । बाबा मुझसे कहते थे कि तुम इनको पढ़ा दो, तब मैं उनको संस्कृत पढ़ाया करता था ।

जब बरसाने से पचास लड़के मानमंदिर पहुँचे और कठोर शब्द बोलने लगे तो यहाँ पर उस समय १५ लड़के थे, उन्होंने बरसाने के लड़कों को धमकाया और दौड़ाया तो उनमें भगदड़ मच गयी । मान मंदिर के सभी लड़कों ने दूर तक उनका पीछा किया । जयपुर मंदिर तक उनका पीछा किया और ये बरसाना के लड़के भयभीत होकर भागते चले जा रहे थे । इन विरोधियों के मन में बाबा के परिकरों से भय बना रहता था ।

प्रश्न – गह्वरवन के संत गोवर्धन बाबा की जब हत्या हो गयी, उसके बाद क्या हुआ ?

पंडितजी – मृत्यु के उपरान्त वे भइयाजी के पिता प्रकाशजी के स्वप्न में आये और बोले – भैया प्रकाश ! मैं बहुत कष्ट भोग रहा हूँ । बाबा से प्रार्थना करो कि वे मुझे भागवत कथा सुना दें । सन् १९८५ में बाबा ने उनके उद्धार के लिए गह्वरवन में भागवत-सप्ताह-कथा की थी । कथा समाप्त होने के एक दिन पहले गोवर्धन दास बाबा पुनः प्रकाश जी के स्वप्न में आये और बोले कि अब मेरी मनोकामना पूर्ण हो गयी है, मेरे सभी संकट दूर हो गये हैं, अब मुझे किसी प्रकार का कष्ट नहीं है । बाबा ने मुझ पर बड़ी दया की और अब मेरा उद्धार हो गया है ।

विरोधी पक्ष के लोगों ने गह्वर वन को चार लाख रुपये में बेचने की योजना बना ली थी, (जो आजकल के चार करोड़ रुपये से भी अधिक है) इसका कारण यह था कि यहाँ पर बिल्डिंग बन रही थीं । चिकसौली के प्रधान ने दोहनी कुण्ड के पेड़ों को बेच दिया ।

प्रश्न – जब आप वृन्दावन में अध्ययन करते थे तो आपको मृत्यु होने का और यमराज के यहाँ जाने का अनुभव हुआ था, उसके बारे में थोड़ा बताइए ।

पंडितजी – यह सन् १९६५ की बात है । मैं वृन्दावन में पढ़ने के लिए गया था । वहाँ पर एक दाऊ जी का मंदिर है । हमारे जतीपुरा के रिश्तेदार का वहाँ प्रभाव था । उस मंदिर की जो मालकिन थीं, वे उनके परिचय की थी । मेरी व्यवस्था उस मंदिर में कर दी गयी थी । मैं उनके बेटे को पढ़ा भी दिया करता था । उस मंदिर में एक ओर दाऊजी का विग्रह था और उनके सामने हनुमानजी का विग्रह था । मैं हनुमानजी के विग्रह के निकट ही रहता था । उस समय मैं बीमार बहुत पड़ा, इतना अधिक बीमार हुआ कि मेरे जीवित रहने की कोई आशा नहीं रही । मंदिर की मालकिन ने मेरे बीमार होने का समाचार जतीपुरा में मेरे रिश्तेदार के यहाँ भेज दिया क्योंकि यहाँ हमारे घर में समाचार भेजने का कोई साधन नहीं था । उन्होंने समाचार भेजा कि रामजीलाल की (मेरी) जान खतरे में है, यह पता नहीं कि जीवित बचेंगे कि नहीं । इसकी सूचना मिलते ही मेरी माताजी और बाबा महाराज तुरन्त ही वृन्दावन पहुँचे । रात के समय मुझे तख़्त से उतारकर नीचे धरती पर यह सोचकर लिटा दिया गया था कि अब इनकी मृत्यु होने वाली है । उस समय मेरी आयु लगभग १६-१७ वर्ष थी । अब मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि यमराज के दूत लेने आये हैं । वे मुझे यमराज के पास ले गये । मैंने यमराज का दर्शन किया । उस समय मेरे मन में रोष भी था, आँखों में आँसू भी थे । उस समय मैं शास्त्रों की बात तो जानता नहीं था, केवल बाबा महाराज की सन्निधि में ही रहा था । बिना शास्त्र का अध्ययन किये ही मैंने यमराज से भागवत धर्म के अनुसार ही बात की । मैंने यमराज से कहा कि मैं वृन्दावन धाम में, हनुमान जी के मंदिर में था तब आपके दूतों की वहाँ से मुझे लाने की कैसे हिम्मत हुई ? वहाँ तो इन्हें जाना ही नहीं चाहिए था । दूसरी बात कि मैं बाबा महाराज जैसे सिद्ध महापुरुष की सन्निधि में रहा हूँ, वृन्दावन के उस मंदिर में भी संत रहा करते थे, ऐसे स्थिति में जिस व्यक्ति को संतों का

संग मिला हो, उसके पास तो आपके दूतों को नहीं जाना चाहिए था । मेरी बातों को सुनकर यमराज ने एक शब्द कहा – 'कर्मों का फल तो भोगना ही पड़ता है ।' उनकी बात को सुनकर मैंने यमराज से कहा कि आप मुझको पांच-दस मिनट की छुट्टी दे दीजिये, उसके बाद फिर आप जैसा चाहे करिए । यमराज ने पूछा कि दस मिनट में तुम क्या करोगे ? मैंने कहा कि मैं बाबा महाराज के यहाँ तथा ब्रज में रहने वाले साधुओं को यह बताऊँगा कि कथा सुनने और कीर्तन करने से कुछ नहीं होता है । इसलिए आप लोग इसे छोड़ दीजिये क्योंकि अपने कर्मों का फल तो सबको अवश्य ही भोगना पड़ता है । बाबा महाराज के प्रति मेरा इतना अगाध श्रद्धा-विश्वास था कि मैंने यमराज को भी कुछ नहीं समझा । मेरी बात सुनकर यमराज थोड़ा मुस्कुराये और उन्होंने अपना हाथ नीचे की ओर किया । इसके बाद मैंने देखा कि मैं तो फिर से अपने शरीर में और वृन्दावन के उसी मन्दिर में हूँ । मेरी आँख खुल गयी किन्तु मुझे यमलोक का सारा दृश्य याद था । जब बाबा महाराज वहाँ पहुँचे तो मैंने इस घटना के बारे में उनको बताया तो उन्होंने कहा कि यह घटना सत्य है । वस्तुतः दो-तीन बार मेरी मृत्यु हो चुकी है किन्तु बाबा महाराज की कृपा से मैं पुनः जीवित हो जाता था । एक बार तो मैं प्रयाग में कथा कह रहा था तो कुछ क्षणों के लिए मैं बेहोश हो गया और ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं ऊपर उड़ता चला जा रहा हूँ ।

प्रश्न – बाबा महाराज का मंदिर में रहने वाले बालकों के प्रति कैसा अनुशासन रहता था ?

पंडितजी – कोई चंचलता करने पर बाबा बालकों पर बहुत कड़ाईपूर्वक डाँटकर व दण्ड देकर अनुशासन करते थे । मेरी तो इतनी पिटाई हुई कि शायद ही किसी की हुई होगी । एक बार मुझे बाबा पीट रहे थे तो एक बालक को बिना पिटे ही लघुशंका हो गयी ।

गर्मियों के मौसम में बाबा प्रायः गोकुल-दाऊजी जाया करते थे । एक बार हम लोग महावन में ब्रह्माण्ड घाट पर थे । मेरे पास एक पाँच रुपये का नोट था । संयोग से जब मैं यमुनाजी में स्नान करने गया तो देखा कि वह नोट मेरे पास नहीं था । उस समय बाबा ने मेरी बहुत पिटाई की किन्तु मेरी आँख से एक भी आँसू नहीं निकला । मैंने सोचा कि यदि मैं रो दूँगा तो लोग बाबा की निन्दा करेंगे कि ये तो बड़े ही क्रूर हैं । इसलिए आँसू आने पर भी मैं उन्हें रोक लेता था । मेरे मन में यह भाव था कि बाबा की कोई निन्दा न करे । उस समय पाँच रुपये की कीमत बहुत होती थी और बाबा ने पिटाई इसलिए करी कि इतनी असावधानी क्यों की ? होनहार की बात कि जब मैंने स्नान कर लिया तो वह पाँच रुपये का नोट मिल गया । बाबा ने कहा कि तुमको सावधानी रखनी चाहिए । इस तरह बाबा का अनुशासन बहुत कठोर था । मेरी और राधाकान्त की सबसे अधिक पिटाई होती थी । जिस समय रात को मान मंदिर में कीर्तन होता था, बड़े जोर से वाद्ययन्त्र बजाये जाते थे । उस समय यदि किसी वाद्य को किसी ने गड़बड़ बजा दिया अथवा उसकी ध्वनि धीमी कर दी तो बाबा महाराज इतनी जोर से आवाज लगाते थे कि उसको सुनकर कितने ही बालकों को लघुशंका हो जाती थी ।

बाबा बच्चों को वीरता की बातें सुनाया करते थे कि प्राण भले ही चले जाएँ परन्तु सत्य और धर्म के मार्ग से पीछे मत हटना । वीरता के पद बाबा बच्चों को गाकर सुनाया करते थे । मरना तेरी गली में जीना तेरी गली में – इस गीत को बाबा बहुत गाया करते थे ।

बुलंदशहर के रहने वाले एक भक्त दया जी यहाँ प्रायः ही आया करते थे । उनका परिकर भी था । दया जी ने बहुत से पुस्तकें भी लिखी थीं । वे गरीब थे । उनसे पहले हापुड़ के भक्त मान मंदिर में आया करते थे । एक बार दया जी पहले आये हुए थे । वे नृत्य भी बहुत बढ़िया करते थे । वे वृद्ध हो चुके थे, फिर भी नृत्य करते थे ।

मैं स्कूल से पढ़ाकर रात को १०-११ बजे तक यहाँ लौटकर आता था । एक दिन मैंने बाबा से कहा कि रात्रि को मुझे भय लगता है । बाबा ने कहा कि जहाँ तुमको भय लगता है, उसी स्थान पर होकर आओ । नीचे गह्वरवन में श्मशान के पास दगरा था । बाबा कहते थे कि वहाँ होकर आओ तो मैं वहीं होकर आता था । बाबा मानमंदिर में बालकों को पद-गान सिखाते थे । जो बच्चे स्कूल में पढ़ते थे, उनको पढ़ा भी देते थे । बाबा के प्रेम के कारण बालक उनको छोड़ना नहीं चाहते थे । बालकों को मारने-पीटने के पीछे बाबा का उद्देश्य उनको सुधारना था । 'हित अनहित पशु-पक्षिहु जाना ।'

अपना हित कौन करता है और हानि कौन करता है, यह तो पशु-पक्षी भी जानते हैं । अतः ये बालक भी जानते थे कि बाबा हर तरह से हमारा हित ही कर रहे हैं । बाबा बालकों को प्यार भी बहुत करते थे । बाबा महाराज के लिए कोई खाने की वस्तु आती तो उसे वे स्वयं न खाकर बालकों को खिला देते थे ।

प्रश्न – बाबा महाराज की दिनचर्या क्या रहती थी ?

पंडितजी – बाबा गाने के तो शौक़ीन थे ही, जब भी उनको समय मिलता, वे तानपुरा लेकर गाया करते थे । कभी पुस्तकों का अध्ययन किया करते थे । बाबा का अधिकांश समय आध्यात्मिक ग्रन्थों को पढ़ने में ही व्यतीत होता था । सखीशरणमहाराजजी बाबा के वस्त्र धोया करते थे । वे जितने समय तक बाबा के सम्पर्क में रहे, बड़ी ही श्रद्धा के साथ रहे ।

बाबा महाराज ने गह्वरवन में जो अपने लिए कुटी बनवाई थी, उसमें पहले स्त्रियों का प्रवेश ही नहीं था । बाबा गाँवों में जब भिक्षा माँगने जाते तो बड़े ही शाही ढंग से 'ब्रजरस फैलाते हुए' जाया करते थे, वे कीर्तन करते हुए भिक्षा माँगते थे; उनके कीर्तन की ध्वनि सुनकर गाँव वालों को पता चल जाता था कि बाबा आ रहे हैं । चिकसौली गाँव की स्त्री मन्ना के जो पिता थे, उनके कोई पुत्र नहीं था, उनका गह्वरवन के सिद्ध सन्त पण्डित हरिश्चन्द्रजी से बड़ा प्रेम था । जब मन्ना के घर बाबा जाते तो उनके पिताजी बाबा के पीछे बैठ जाते और उनके शरीर को सूँघा करते थे । यह बाबा के प्रति उनका विशेष भाव था, वे बाबा के शरीर को दिव्य समझते थे । जब पण्डित हरिश्चन्द्रजी का अंतिम संस्कार हुआ था तो शव को रखने की जो काठी होती है, उसके बाँस को मन्ना के पिताजी उठा लाये थे और उन्होंने पण्डित बाबा से कहा – 'बाबा ! या तो एक साल के भीतर मुझे कोई पुत्र दे दो और नहीं तो मुझे संसार से उठा लो ।' उनके कोई पुत्र तो नहीं हुआ किन्तु साल भर के भीतर ही उनका निधन हो गया था । दोहनी कुण्ड के पीछे की ओर एक मिट्टी का खदाना था, वहीं पण्डित हरिश्चन्द्रजी महाराज का अंतिम संस्कार किया गया था । बाबा महाराज प्रतिदिन वहाँ जाते और पण्डित बाबा की याद में रोया करते थे । मेरा तो पण्डित बाबा के प्रति इतना लगाव नहीं था, केवल इतना ही पता था कि अमुक स्थान पर उनका अन्तिम संस्कार हुआ था परन्तु बाबा महाराज का पण्डित बाबा के प्रति बहुत अधिक प्रेम था । उस समय मैं बहुत छोटा था ।

श्रद्धा-निष्ठा का प्रभाव

परम पूज्य 'श्रीबाबामहाराज' के सम्बन्ध में श्रीभागवत कथा-व्यास 'श्रीरामजीलाल शास्त्रीजी' द्वारा कथित भावोद्गार (२१ अप्रैल, २०२५)

प्रश्न – जब श्रीप्रियाशरण बाबा महाराज का गोलोक वास हुआ तो उनके अन्तिम संस्कार के समय आप बाबा महाराज के साथ गये थे, उस समय की घटना के बारे में बताइये ।

पंडितजी – गोवर्धन के प्रसिद्ध संत पण्डित गयाप्रसादजी 'प्रियाशरणबाबा' का बहुत सम्मान करते थे । पण्डित गया प्रसाद जी 'बाबा प्रियाशरणजीमहाराज' का दर्शन करने गोवर्धन स्थित अकोला वाली धर्मशाला में जाया करते थे और अपने हाथ से उनके पाँव में जूते पहनाते थे । पण्डित गया प्रसादजी दानघाटी के पास रहते थे और 'प्रियाशरणबाबा' बस स्टैंड के निकट स्थित धर्मशाला में रहते थे । धर्मचन्द्र नामक एक धनाढ्य व्यक्ति थे, वे प्रियाशरणजीमहाराज के पास रहते थे और उनकी भक्ति करते थे । बाबा प्रियाशरणजीमहाराज बड़े ही फक्कड़ स्वभाव के थे । एक बार उन्होंने धर्मचन्द्रजी को फटकार दिया तो धर्मचन्द्रजी ने कहा – 'बाबा ! राधे-राधे कहो ।' बाबा प्रिया शरण महाराज का सारा जीवन ही राधा नाम के जप में व्यतीत हुआ था, उनकी जिह्वा से स्वतः ही राधा नाम का उच्चारण सतत् होता रहता था और उनको धर्मचन्द्रजी कह रहे थे कि बाबा ! राधे-राधे कहो ...। उनकी बात सुनकर प्रियाशरणमहाराजजी ने कहा – 'धर्मचन्द्रजी ! क्या तुम ही मेरा उद्धार करोगे ?' ऐसा कहकर उन्होंने धर्मचन्द्रजी को फटकार दिया था ।

एक दिन श्रीप्रिया शरण महाराजजी से लोगों ने पूछा – 'बाबा ! आपकी अन्तिम इच्छा क्या है ?' श्रीप्रियाशरण बाबा ने कहा – 'मेरी मृत्यु होने पर ब्रज की सभी लीलास्थलियों की रज मेरे शरीर पर लगा देना । दूसरे, मेरा अंतिम संस्कार किसी साधु के द्वारा नहीं अपितु किसी ब्रजवासी के द्वारा मेरा अन्तिम संस्कार होना चाहिये । तीसरी बात यह कि बरसाना के कंडों पर मेरे शरीर का अग्नि संस्कार हो ।' यह बात मेरे मित्र पचोरी ने मुझे बताई थी, वे पण्डित गया प्रसादजी के यहाँ रहते थे । मैं साइकिल के द्वारा बच्चों को पढ़ाने के लिए गोवर्धन के आगे स्थित नैनू पट्टी के विद्यालय जा रहा था । दानघाटी से जतीपुरा की ओर जो मार्ग जाता है, वहाँ मैंने सुना, लोग चर्चा कर रहे थे कि बाबा प्रियाशरणजी पधार गये । मुझे यह सुनकर बहुत धक्का लगा । मैंने विचार किया कि यह सूचना अपने बाबा को देनी चाहिए । तुरंत ही मैं साइकिल से बरसाने के लिए चल दिया और एक घंटे के भीतर यहाँ पहुँच गया । मैंने बाबा महाराज के पास जाकर उन्हें बताया कि बड़े बाबा महाराज पधार चुके हैं । मैं यही बताने के लिए आपके पास आया हूँ । उसी समय बाबा ने बरसाने के गोस्वामी गोपीचन्द्रजी को खबर पहुँचवायी; वे बड़े अच्छे वक्ता थे । बरसाने के आठ-दस गोस्वामियों के पास भी प्रियाशरणबाबा के पधारने की सूचना दी गयी । बड़े बाबा के प्रिय कृपापात्रों में बरसाना के राधेश्याम और बनवारी थे किन्तु उस समय वे बड़े बाबा के पास उपस्थित नहीं थे । अंत में गोपीचन्द्र जी, सत्यनारायण, बनवारी आदि आठ-दस लोग बाबा महाराज के साथ बस के द्वारा गोवर्धन गये, मैं भी साथ में था । कुछ लोग यहाँ से ट्रैक्टर के द्वारा भी गये थे । मुझे कंडे वाली बात याद थी तो मैं पांच कंडे अपने घर से ले गया था । इसके अलावा बरसाने के कई स्थानों की रज भी मैं ले गया था । जब हम लोग गोवर्धन पहुंचे तो वहाँ पर साधुओं का बहुत बड़ा समूह एकत्रित था । उस समय बड़े बाबा के पार्थिव शरीर को चिता पर लिटा दिया गया था । उनका मुख दिखाई दे रहा था । इधर वृन्दावन से आये साधुओं के मध्य बड़े बाबा के अंतिम संस्कार को लेकर विवाद हो रहा था कि उनका अंतिम संस्कार हम लोग करेंगे । उनका बहुत बड़ा समुदाय था । उस समय अपने बाबा महाराज ने बड़े जोर से जयकारा लगाया – 'राधारानी की जय ।' वृन्दावन के सन्तों का ध्यान गया कि ये भी आ चुके हैं । बाबा सीधे बड़े बाबा की चिता के पास पहुंचे और दो-चार बरसाने के कंडे उठाकर उनके सिर के पास रख दिए । बरसाने की रज लेकर उनकी छाती पर लगा दिया । इसके बाद गोपीचन्द्रजी ने बनवारी से कहा – 'बनवारी ! दाग दे ।' बनवारी ने बड़े बाबा के पार्थिव शरीर का अग्नि संस्कार किया और वृन्दावन के संत देखते रह गये । बाबा महाराज के सामने उनका कुछ कहने का साहस नहीं हुआ । गोपीचन्द्र जी ने एक बड़ी विचित्र घटना सुनाई थी । बड़े बाबा के गोलोकवास के उपलक्ष्य में गोवर्धन में दो भण्डारे होते थे । एक रक्षाबन्धन के दिन और एक होली के आसपास । रक्षाबन्धन के दिन हुए भंडारे में बरसाने से दस-पन्द्रह लोग गये थे । वर्तमान में गोवर्धन के परिक्रमा मार्ग में जहाँ पर बड़े बाबा की समाधि है, वहीं पर भण्डारा हुआ था । जब पंगत हो रही थी, उसी समय वर्षा होने लगी । किसी को अनुमान नहीं था कि आज वर्षा होगी अतः वर्षा से बचाव के लिए तम्बू आदि की भी व्यवस्था नहीं की गयी थी । जब वर्षा की बूँदें गिरने लगीं तो बरसाने के गोपीचन्द्र ने एक लड़के से कहा – 'इस इन्द्र को जूते से मारो ।' इसके बाद उन्होंने लड़के से कहा कि यहाँ धरती पर लिखो – 'इन्द्र' । जब इन्द्र लिख दिया गया तो गोपीचन्द्र जी ने उस पर दो-तीन बार जूते से प्रहार किया । जूते का प्रहार होते ही अकस्मात् वर्षा बिल्कुल बन्द हो गयी, फिर सभी ने बड़े प्रेम से बड़े बाबा के भण्डारे का प्रसाद ग्रहण किया । बाबा महाराज भी उस भण्डारे में गये थे ।

प्रश्न – ब्रज के पर्वतों की रक्षा के सम्बन्ध में बाबा महाराज द्वारा जो प्रयास किये गये, उसके बारे में थोड़ा बताइये ।

पंडितजी – ब्रज के पर्वतों की रक्षा हेतु बाबा के द्वारा बहुत प्रयास किये गये । उस समय राजस्थान का सारा प्रशासन बिका हुआ था । खनन माफियाओं के पास बहुत पैसा था, उन्होंने प्रशासन को खरीद लिया था, इसलिए वे खनन माफियाओं के विरुद्ध कोई कार्रवाही नहीं करते थे । उस समय की राजस्थान की मुख्य मन्त्री वसुन्धरा राजे भी इसमें लिप्त थी क्योंकि उसके मन्त्रियों की खानें ब्रज में चलती थीं, इसलिए वह खनन-माफियाओं का पूरी तरह समर्थन करती थी । एक बार मान मंदिर की ब्रजयात्रा कामा में रुकी हुई थी । उस समय वसुन्धरा कामा में आयी हुई थी । ब्रजयात्रा के हजारों

यात्रियों के साथ मान मंदिर के प्रतिनिधि उससे मिलने हैलीपैड गये किन्तु उसने किसी से बात ही नहीं की । बाबा महाराज ने उसी समय कहा कि अब यह सत्ता में नहीं रहेगी । बाबा की भविष्यवाणी सत्य हुई । जब राजस्थान में चुनाव हुए तो वह पराजित हो गयी ।

प्रश्न – मान मंदिर की ब्रज यात्राओं में हुए चमत्कारों के बारे में कुछ बताइये ।

पंडितजी – एक बार यमुनाजी में बहुत भयंकर बाढ़ आई थी । लोग कहने लगे कि यह तो यमुना का विकराल रूप है । इससे बहुत विनाश होगा । श्रीबाबा महाराज ने कहा – 'नहीं, यह तो यमुनाजी का मंगलमय स्वरूप है । इससे किसी का विनाश नहीं हो सकता है । जितनी भी गंदगी है, वह यमुना जल में बहकर चली जायेगी ।' यह १९९७ की बात है । उस समय मान मन्दिर की ब्रजयात्रा वृन्दावन में थी । तहसीलदार मान मन्दिर के घनिष्ठ परिचित थे । उन्होंने कहा कि डी.एम. का आदेश हो गया है, अब तो वृन्दावन में कुछ दिन और रुकना होगा । बाढ़ के कारण वृन्दावन के आसपास के कई गाँव खाली करा दिए गये हैं । यमुना को पार नहीं किया जा सकता है । बाबा ने कहा – 'ठीक है, देखा जाएगा ।' अगले दिन सबेरा होने पर बाबा महाराज तो चल दिए । केशी घाट जाना था । वहाँ से यात्रा को भांडीर वन पहुँचना था । उस समय यमुनाजी का दृश्य बड़ा ही भयंकर था, ऊंची-ऊंची लहरें उठ रही थीं । कुछ लोग तो नाव में बैठ गये । बाबा महाराज और कीर्तन करने वाले स्टीमर में बैठ गये । चारों ओर जल ही जल दिखाई दे रहा था । बीच मझधार में जब स्टीमर पहुँचा तो उसका ड्राइवर बोला कि डीजल समाप्त हो गया है । बाबा महाराज ने कहा कि सभी लोग कीर्तन करो । सभी ने कीर्तन किया । हमारे स्टीमर का ड्राइवर एक दूसरे स्टीमर में बैठकर डीजल लेने के लिए वृन्दावन चला गया । अब उस स्टीमर में न तो कोई ड्राइवर था और न डीजल था परन्तु बड़ी ही तन्मयता के साथ ब्रजयात्री कीर्तन कर रहे थे । सभी को चारों ओर से मृत्यु ही दिखाई दे रही थी । यमुनाजी में इतनी बाढ़ थी कि यदि कोई डूब जाता तो पता ही नहीं चलता कि उसका शरीर कहाँ लापता हो गया ? श्रीजी की ऐसी विलक्षण कृपा हुई कि स्टीमर के नीचे अथाह जल में कोई टापू अथवा रेतीली भूमि निकल आई , जिस पर स्टीमर टिक गया और ४५ मिनट के बाद ड्राइवर डीजल लेकर आ गया, फिर उसने स्टीमर में डीजल डाला, तब स्टीमर चला और किसी तरह की कोई दुर्घटना नहीं हुई ।

प्रश्न – आपको बाबा महाराज ने भागवत कथा करने के लिए कब प्रेरित किया ?

पंडितजी – सन् १९८५ में बाबा महाराज ने गह्वर वन में जो भागवत सप्ताह कथा कही थी, उसे हमारे पिताजी ने सातों दिनों तक सुना था किन्तु उसके बाद उनका स्वास्थ्य बहुत ख़राब हो गया । डॉक्टर को बुलाया गया, पिताजी की स्थिति को देखकर उसकी आँखों में आँसू आ गये और उसने कहा कि अब यह इनका अंतिम समय है । अब ये अधिक समय तक जीवित नहीं रह पायेंगे । ऐसा कहकर डॉक्टर चला गया । उस समय मैंने बड़े ही आवेश के साथ नारायण कवच का पाठ करना आरम्भ किया । रात्रि के बारह बज गये । भागवत के भण्डारे का सभी प्रसाद रस मन्दिर से कुटी में पहुँचा दिया गया । मैं निरन्तर नारायण कवच का पाठ करता रहा । रात १२ बजे के बाद पिताजी ने आँख खोली और मुस्कुराते हुए बोले कि अब मैं ठीक हूँ । अब तुम मान मन्दिर चले जाओ । यह घटना सन् १९८५ की थी और १६ साल बाद यानि सन् २००१ में उनका निधन हुआ था । सन् १९८५ की बीमारी से ठीक होने के बाद पिताजी के विचार पूरी तरह बदल गये । बाबा के प्रति उनकी श्रद्धा बहुत अधिक बढ़ गयी । इसके पहले मेरी माताजी की जितनी श्रद्धा बाबा के प्रति थी, उतनी पिताजी की नहीं थी । पिताजी के निधन से एक दिन पहले मैं स्कूल पढ़ाने के लिए जा रहा था तो मेरे छोटे भाई लाला ने कहा कि आज आप मत जाओ । १४ जनवरी से मेरी भागवत कथा ढिलावटी गाँव में होने को थी और वहाँ के लोग अपने वाहन से मुझे लेने के लिए आ रहे थे । इधर पिताजी की हालत ऐसी हो गयी थी कि उन्हें बिस्तर से उतारकर धरती पर लिटा दिया गया था । उस समय बाबा महाराज भी मान मंदिर से उन्हें देखने आये थे । जब बाबा चलने लगे तो मैंने उनसे कहा कि ऐसा प्रतीत होता है कि पिताजी का अब अन्तिम समय है । उस समय मैं नारायण कवच का पाठ कर रहा था तो बाबा ने कहा कि जो तुम पाठ कर रहे हो, उसे करते रहो । बाबा के कहने पर मैं पाठ करता रहा । इधर

सखीशरण महाराजजी को रात में स्वप्न में भगवान् के पार्षद दिखाई दिए और उन्होंने कहा कि अब इनका समय आ गया है, इसलिए इनको जाने दो । मैं पिताजी के लिए नारायण कवच का पाठ कर रहा था, इस कारण से वे जीवित थे । जब पाठ पूरा हुआ तो मैंने उनके मुख में थोड़ा जल डाला और इसके साथ ही उनके प्राण निकल गये । मेरे रिश्तेदारी के एक व्यक्ति ने मुझसे कहा कि तुम पिताजी की शव यात्रा के समय इनको कन्धा मत लगाना । उनका अभिप्राय यह था कि कल मुझे कथा के लिए जाना है । उनकी बात मैंने मान ली और पिताजी के शव को कन्धा नहीं लगाया ।

प्रश्न – लोगों ने आपसे कहा नहीं कि सूतक में कथा कैसे कहोगे ?

पंडितजी - जो कथा के आयोजक मुझे लेने के लिए आये थे, वे पिताजी की मृत्यु से पहले आये थे, उनके सामने ही पिताजी का निधन हो गया था । मैंने उनसे कहा कि ऐसी स्थिति में तुम यदि मुझसे कथा कराओगे तो लोग तुमसे कहेंगे कि सूतक में कथा कैसे करा ली ? ये तुम्हारे लिए ठीक नहीं रहेगा । वे लोग बोले कि हमें दुनिया की कोई परवाह नहीं है । हमारे गाँव में कथा तो आपकी ही होगी, चाहे आप कोई दूसरा समय दे दीजिये । अब मैं उनको अगला समय कैसे दे सकता था क्योंकि २२ जनवरी से ३० जनवरी तक मेरी कथा जयपुर में होने वाली थी । उसके बाद फरवरी में बरसाने की रंगीली होली का समय आ जाता । उसमें में भी मैं बरसाने में ही रहता । अंत में मैंने उन लोगों से कहा कि तुम इस विषय में बाबा महाराज से बात कर लो । वे लोग बाबा महाराज के पास गये और बोले कि महाराज जी ! कल से हमारे गाँव में पंडितजी की कथा है किन्तु उनके पिताजी की अब मृत्यु हो चुकी है तो क्या किया जाए ? बाबा महाराज ने कहा कि तुम लोग ही सोच लो कि क्या करना है ? इस स्थिति में कथा करवाने के कारण लोग तुम्हें सूतक में कथा करवाने का कलंक लगायेंगे । उन लोगों ने बाबा से भी यही कहा कि हमें दुनिया की कोई परवाह नहीं है, हमारे गाँव में कथा तो पंडितजी की ही होगी । बाबा ने कहा कि ठीक है, पंडितजी की कथा अपने गाँव में करवाओ । कल से ही कथा प्रारम्भ करवा दो । यदि सूतक के बारे में कोई कुछ कहता है तो उसका जवाब मैं दूँगा । इस तरह १३ जनवरी, सन् २००१ को पिताजी की मृत्यु हुई और उसके ठीक अगले दिन १४ जनवरी को बाबा महाराज के आदेशानुसार मैंने ढिलावटी गाँव में कथा कहना प्रारम्भ कर दिया । एक दिन बाबा भी उस कथा में गये थे । एक बार किसी व्यक्ति ने आलोचना करी कि इन्होंने कथा को किस प्रकार व्यापार बना लिया है कि सूतक के समय भी कथा करने चले आये । कामा के एक व्यक्ति ने उसका खण्डन करते हुए कहा कि पंडितजी की कामा में बहुत सी कथायें हो चुकी हैं, उन्होंने एक भी कथा में पैसा नहीं लिया । इस बात को कामा के सभी लोग जानते हैं ।

प्रश्न – कामा के चौबेजी बाबा से किस तरह जुड़े ?

पंडितजी – चौबेजी कामा के स्टेट बैंक में नौकरी करते थे । एक दो बार वे बाबा महाराज का दर्शन करने मान मन्दिर भी आये । इनको बाबा का सत्संग बहुत अच्छा लगा । ये जब भी मान मंदिर आते तो बाबा के सत्संग का लाभ लेने के लिए अपने साथ कामा से अन्य लोगों को भी साथ लाते थे । इनके साथ एक व्यक्ति आते थे, वे विद्वान् थे तो बाबा की परीक्षा लेने के लिए तरह-तरह के प्रश्न नोट करके लाते थे कि महाराजजी यदि मेरे इन प्रश्नों का उत्तर दे दें तो मैं उनको मानूँगा । जब वे गह्वर वन में आते तो बिना उनके प्रश्न किये बाबा महाराज अपने सत्संग में उन्हीं विषयों को बोलते, जिनके सम्बन्ध में इन व्यक्ति को शंका थी । जब उन्होंने देखा कि बाबा तो वही बात कह रहे हैं जिसका उत्तर मैं चाहता था तो वे बड़े ही आश्चर्यचकित हुए । ऐसी स्थिति में अब वे प्रश्न क्या करते ? ऐसा कई बार होता, वे बार-बार अपने प्रश्न नोट करके लाते कि आज मैं बाबा से ये प्रश्न करूँगा किन्तु यहाँ आकर देखते कि बिना उनके पूछे ही बाबा उसी विषय पर सत्संग देने लगते । ऐसा देखकर उनकी और चौबेजी की श्रद्धा बाबा के प्रति बढ़ती गयी । चौबेजी की सत्संग के प्रति जिज्ञासा देखकर बाबा ने एक बार उनसे कहा कि यदि तुमको भक्ति करना है तो विवाह मत करना । चौबेजी का भी विवाह करने का विचार नहीं था किन्तु उनकी माताजी का इस बारे में दुराग्रह था । अपनी माँ के हठ करने के कारण चौबेजी को विवश होकर विवाह करना पड़ा ।

संत-शरणागति से ही सम्यक् प्रचार

परम पूज्य 'श्रीबाबामहाराज' के सम्बन्ध में श्रीभागवत कथा-व्यास 'श्रीरामजीलाल शास्त्रीजी' द्वारा कथित भावोद्गार (२१ अप्रैल, २०२५)

प्रश्न – आपने अपनी सबसे पहली भागवत कथा कौन से सन् में की थी ?

पंडितजी – वैसे तो मैंने अपनी सर्वप्रथम कथा सन् १९८३ में दिल्ली वाली ऊषाजी के यहाँ की थी । ऊषाजी की माँ का निधन हो गया था । उसके बाद मेरा मनोबल गिरा । मैंने विचार किया कि मैं शिक्षित व्यक्ति हूँ । कथा तो बहुत से लोग कह लेते हैं । सन् १९८८ की ब्रजयात्रा के बाद बाबा महाराज ने बहताना वाले रघुवीर भगत जी से कहा कि अपने गाँव में तुम पंडितजी की भागवत कथा का आयोजन करो । बाबा की आज्ञा से मैंने उनके गाँव में कथा करी । वहाँ पहले भागवत कथा होती थी और उसके बाद में कीर्तन होता था । कीर्तन से सभी त्रुटियों-दोषों की कमी दूर हो जाती है । नाम संकीर्तन से यज्ञ की समस्त कमियाँ पूरी हो जाती हैं । इसीलिए भागवत कथा के अतिरिक्त शेष समय में भगतजी ने नाम संकीर्तन की व्यवस्था की थी । इसके बाद कुचावटी गाँव में कथा का आयोजन हुआ । इसके बाद कुचावटी में दुबारा कथा हुई । उस साल यानि सन् १९८९ में मेरी दस भागवत कथायें हुई थीं । श्रीबाबा महाराज का कठोर आदेश था कि किसी भी कथा में अपनी ओर से अर्थ की याचना कभी मत करना, सदा ही निष्काम भाव से जनकल्याण की भावना से कथा करना । मैंने बाबा महाराज की आज्ञा का पूर्णतया पालन किया । दूसरी बात यह थी कि मैंने अपनी अध्यापकी की नौकरी से इस्तीफा नहीं दिया था । मेरे अध्यापकी से सम्बन्धित लोगों को तो यह पता ही नहीं चला कि मैं भागवत कथा भी कहता हूँ । उस दौरान भी मैं साइकिल से अध्यापन के लिए स्कूल जाया करता था । मेरे स्कूल के प्रधानाचार्य और अध्यापकों को कभी भी यह पता नहीं लगा कि मैं भागवत कथा कहता हूँ । मेरे परिचय के कानूनगो साहब मुझसे बहुत प्रेम करते थे । मेरे स्कूल के प्रधानाचार्य का घर उनके घर के पास में था । उन्होंने एक बार प्रधानाचार्य जी को मेरी कथा में आने का निमन्त्रण दिया और कहा कि आपके स्कूल के जो पंडितजी हैं, वे बहुत सुन्दर भागवत कथा कहते हैं । यह सुनकर प्रधानाचार्य जी बड़े ही आश्चर्यचकित हुए । वे मेरी कथा का श्रवण करने के लिए भी आये थे । वहाँ से मेरे शिक्षक विभाग वालों को पता चला कि मैं भागवत कथा भी कहता हूँ । एक-डेढ साल तक मैंने अपने स्कूल के विभाग वालों को पता ही नहीं चलने दिया कि मैं भागवत कथा कहता हूँ । उस दौरान मैं दिन में स्कूल में पढ़ाया करता था और संध्या काल में भागवत कथा कहता था । कथा करने के कारण मेरी बहुत प्रसिद्धि भी हो गयी थी । उसके बाद फिर सन् १९९५-९६ से मैंने स्कूल में अध्यापन का कार्य छोड़ दिया और सन् २००७ में पूर्ण अवकाश ग्रहण (retirement) किया । मैंने अध्यापन का कार्य ३१ वर्षों तक किया । पेंशन का धन भी मैंने अपने पास नहीं रखा, जिस सेवाकार्य में बाबा आदेश देते, वहीं मैं उस धन को लगा देता था ।

प्रश्न – आपने अपनी भागवत कथा के माध्यम से प्रभात फेरी का कार्यक्रम भी चलाया था, उसका प्रारम्भ कब किया था ?

पंडितजी – जबसे मेरी भागवत कथायें बहताना और कुचावटी गाँवों में हुई थीं, श्रीबाबा महाराज की प्रेरणा से वहीं से प्रभात फेरी कार्यक्रम का प्रारम्भ कर दिया था । हर कथा के बाद से उन गाँवों और नगरों में प्रतिदिन प्रभात फेरी चलने लग जाती थी । भागवत कथा में दक्षिणा में अर्पित धन भी कई बार कथा के आयोजकों को ही प्रभात फेरी के माध्यम से नाम संकीर्तन के प्रचार तथा अन्य धार्मिक कार्यक्रमों के लिए सौंप दिया जाता था । पिछली बार कामा की कथा में दक्षिणा में ५७ हजार रुपये अर्पित किये गये थे, उसे भी वहाँ की कमेटी को प्रदान कर दिया था । प्रति वर्ष कामा की कथा में दक्षिणा में अर्पित धन को मैं कमेटी वालों को ही दे देता था । उस धन को कमेटी के सदस्य हर वर्ष मेरी कथा के आयोजन में व्यय करते थे ।

प्रश्न – अमेरिका में आपने दस वर्षों तक कथा की थी, उसका प्रारम्भ कैसे हुआ ?

पंडितजी – एक बार बरसाना में मेरी भागवत कथा हुई थी । पहले कथा के आयोजकों ने नौएडा में कथा करवायी, फिर उन्हीं लोगों ने बरसाना में भी कथा का कार्यक्रम रखा । इस कथा के पहले से अमेरिका के सुभाषजी मेरी कथा से जुड़े

किन्तु अमेरिका के लोगों में सबसे पहले ज्योतिजी जुड़ी थीं । दिल्ली की कथा में भी सुभाषजी आये थे तो उनको मेरी कथा बहुत अच्छी लगी । उन्होंने मेरी अमेरिका की कथा के लिए पहले बाबा महाराज से प्रार्थना की, बाबा ने उनके अनुरोध को स्वीकार किया और फिर बाबा महाराज की आज्ञा से मैं अमेरिका गया । सुभाषजी ने अमेरिका में मेरी कथा के आयोजन का कार्यक्रम बनाया । इसके लिए वीजा आदि के प्रबन्ध की भी उन्होंने व्यवस्था की । अमेरिका जाने के लिए वीजा मिलना बहुत कठिन होता है । सहज में ही किसी को वीजा नहीं मिलता है । जब वहाँ जाने की व्यवस्था हो गयी थी तो सबसे पहली अमेरिका की कथा में हम चार लोग गये थे । जब हम लोग अमेरिका जाने के लिए तैयार हुए तो बाबा महाराज ने मुझसे कहा कि तुम अमेरिका जा तो रहे हो किन्तु वहाँ भारत की नाक मत कटवाना क्योंकि भारत से अधिकतर जो भी कथावाचक, प्रचारक और साधु-संत अमेरिका जाते हैं, धनोपार्जन करने का ही उनका मुख्य उद्देश्य होता है । इसलिए वहाँ के लोग यही सोचते हैं कि ये हिन्दुस्तानी साधु या धर्म प्रचारक डॉलर की भीख माँगने के लिए ही अमेरिका में आये हैं । तुम लोगों को ऐसा नहीं करना चाहिये । सब कुछ करने वाले तो ठाकुरजी ही हैं । उनकी ही इच्छा से अमेरिका जाने का हमारा विधान बन गया । अमेरिका में हम लोगों ने तो कभी भी किसी भी कथा में किसी से धन की याचना नहीं की किन्तु वहाँ के लोगों ने बिना कहे ही मान मन्दिर की ब्रजयात्रा के लिए अर्थ की व्यवस्था की । मेरे द्वारा दस वर्षों तक अमेरिका में कथा कहने के बाद फिर वहाँ के लोगों के विशेष अनुरोध से मुरली का अमेरिका में कथा करने का कार्यक्रम बना । मुरली ने भी अपने दस वर्ष के अमेरिका कथा कार्यक्रम के दौरान कभी भी किसी से धन की याचना नहीं की । इस बात को चाहे कोई समझे या न समझे किन्तु बाबा महाराज का यह स्पष्ट कथन है कि रस मन्दिर, मान मन्दिर और माताजी गौशाला में कोई भेद नहीं है और वे व्यावहारिक रूप से भी इनमें कोई अन्तर नहीं रखते हैं ।

प्रश्न – आपके दस वर्षों तक अमेरिका में निष्काम भाव से कथा वाचन के कारण वहाँ के लोगों पर काफी प्रभाव पड़ा होगा ?

पंडितजी – श्रीबाबा महाराज के निर्देशानुसार, उनके बताये हुए सिद्धान्त के अनुसार कथा कहने से केवल अमेरिका में ही नहीं बल्कि भारत के भी सभी गाँवों और नगरों में श्रोताओं पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा । धीरे-धीरे प्रभाव पड़ता ही है ।

"शनैः संथाः शनैः पन्थाः शनैः पर्वत लङ्घनम् । शनैर्ज्ञानं शनैर्मानं पञ्चैतानि वर्द्धन्ते शनैः शनैः ॥"

'शनैः संथाः' सन्मार्ग पर मनुष्य धीरे-धीरे ही आगे बढ़ता है । 'शनैः पन्थः' – रास्ता भी धीरे-धीरे ही तय होता है । 'शनैः पर्वत लङ्घनम्' – पर्वत शिखर पर कोई एकदम से छलाँग लगाकर नहीं पहुँचता है, धीरे-धीरे ही चढ़ता है । 'शनैः ज्ञानम्' – ज्ञान भी धीरे-धीरे ही बढ़ता है । 'शनैः मानम्' – सम्मान भी धीरे-धीरे बढ़ता है । 'पञ्चैतानि वर्द्धन्ते शनैः शनैः' – ये पाँचों चीजें धीरे-धीरे ही बढ़ती हैं । मैं तो इन सब चीजों से हीन हूँ । न तो मुझमें कोई संगीत की योग्यता है, न ही मैंने शास्त्रों का विशेष अध्ययन किया है, केवल बाबा महाराज के सत्संग में जो कुछ सुन लेता हूँ, उसी को अपनी कथा के माध्यम से कह देता हूँ । इतनी ही मेरी दुनिया है ।

प्रश्न – बाबा महाराज तो सबको संगीत सीखने के लिए विशेष रूप से प्रेरित करते रहते हैं और सिखाते भी हैं, फिर आपने संगीत क्यों नहीं सीखा ?

पंडितजी – कुछ चीजें ऐसी होती हैं, जो संस्कार की होती हैं । मुझे आज तक ताल का कभी व्यावहारिक ज्ञान नहीं हुआ । केवल सैद्धान्तिक रूप से ही ताल का ज्ञान है । एक बार मैं मध्य प्रदेश के दमो नगर में कथा करने के लिए गया था तो वहाँ के कथा आयोजक की पौत्री से मैंने पूछा कि तुम क्या अध्ययन कर रही हो तो उसने कहा कि मैं संगीत से एम.ए. कर रही हूँ । मैं उससे प्रश्न किया कि चार ऐसी तालें बताओ, जिनकी मात्राओं का योग ४० हो । दो-चार इस तरह के प्रश्न मैंने किये जिनका उत्तर वह बालिका नहीं दे सकी परन्तु उन लोगों ने मेरे बारे में समझा कि इनको तो संगीत का बहुत ज्ञान है जबकि मुझे पता है कि संगीत का मेरा क्या स्तर है ? मैंने उस बालिका को बताया कि तीन ताल में १६ मात्रा होती है, दादरा में ६ मात्रा होती है, कहरवा में ८ मात्रा होती है, झपताल में १० मात्रा होती है । इस तरह इन चार तालों की

४० मात्राएँ होती हैं । इसी प्रकार संगीत के बारे में अन्य भी कुछ बातें बतायीं, उसे सुनकर उन लोगों ने सोचा कि इनको तो संगीत का बहुत अधिक ज्ञान है ।

प्रश्न – जब आप पहली बार अमेरिका में कथा करने गये थे तो कुछ लोगों ने उसका विरोध भी किया था कि बाबा दूसरे लोगों को तो धाम निष्ठा सिखाते हैं, ब्रजवास करने के लिए कहते हैं फिर अपने निजी परिकरों को कथा के लिए अमेरिका क्यों भेजते हैं ?

पंडितजी – यहाँ पर अन्य किसी ने तो विरोध नहीं किया, कुछ द्वेषी साधुओं ने हम लोगों के अमेरिका में कथा करने का विरोध किया था । इसके उत्तर में बाबा ने कहा कि ये लोग अमेरिका जाते हैं तो अपने लिए तो जाते नहीं हैं, अपने मनोरंजन के लिए अथवा धन कमाने के लिए तो जाते नहीं हैं, ये लोग तो परोपकार के उद्देश्य से अमेरिका जाते हैं । इनके अमेरिका में जाने से वहाँ के लोगों के आर्थिक सहयोग से प्रति वर्ष निःशुल्क ब्रजयात्रा चलती है, जिसका भारत के हजारों लोग लाभ उठाते हैं । ये लोग स्वयं तो कहीं से अपने लिए पैसा माँगते नहीं हैं । बिना माँगे ही जो धन आता है, क्या उसका उपयोग ये लोग अपने भोग-विलास में करते हैं ?

प्रश्न – क्या अमेरिका में कथा करने से गौशाला चलाने का भी प्रोत्साहन मिला था ?

पंडितजी – हाँ, अमेरिका में एक व्यक्ति थे सतीशजी, वह मेरी कथा से बहुत अधिक प्रभावित थे और मेरे प्रति बहुत अधिक श्रद्धा रखते थे । वे बहुत बड़े गो भक्त थे, उन्होंने ही हमारे समक्ष बरसाना में गोशाला खोलने का प्रस्ताव रखा था । उन्होंने अपना हस्ताक्षर करके मुझे एक खाली चेक दे दिया और कहा कि आप गोशाला के लिए जितना पैसा चाहें, इस पर लिख दीजिये । उस समय हम लोग उनकी आर्थिक क्षमता को नहीं जानते थे । जब उन्होंने बहुत आग्रह किया तो हम लोगों ने उनको अपना अकाउन्ट नम्बर दिया । उसमें उन्होंने गो सेवा के लिए पर्याप्त धन भेजा । आगे चलकर उन्होंने गोशाला में गो सेवा के लिए करोड़ों रुपये दिए । भविष्य में कुसंग के कारण उनके मन में ऐसी धारणा बैठ गयी कि मनुष्य को गाय का दूध नहीं पीना चाहिये । गाय का सारा दूध बछड़ों को पिलाना चाहिए अथवा गोशाला की ही अन्य गायों को पिला देना चाहिए । मैंने उनको बताया कि शास्त्रों में तो गाय के दूध को अमृत बताया गया है । ब्रज में स्वयं ठाकुरजी गो सेवा करते थे, वे स्वयं दूध-दही-माखन का सेवन करते थे और सारे ब्रजवासी गो रस का सेवन करते थे । सतीश जी के विचार में परिवर्तन नहीं आया । वह बोले कि गाय के दूध का उपभोग मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए करता है । उससे तरह-तरह के खाद्य पदार्थ बनाये जाते हैं । यह तो मनुष्य अपने भोग के लिए करता है । गो सेवा के लिए मनुष्य क्या करता है ? मैंने उनको बताया कि जो दुधारू गायें होती हैं, यदि उनके थन से दूध नहीं निकाला गया तो वे बीमार हो जायेंगी, उनको अनेक तरह के रोग हो जायेंगे । इसलिए गायों को बीमारी से बचाने के लिए भी दूध निकालना जरूरी होता है ।

ब्रज में साँझी-लीला का स्वरूप-महत्त्व

ब्रज-वसुन्धरा श्रीराधामाधव युगल रसराज के प्रेम-माधुर्यमय सरस लीलाओं की भूमि है, यहाँ का कण-कण प्रेमरस से अभिसिंचित है । ब्रजभूमि की चराचर प्रकृति विशुद्ध प्रेम की साक्षी व द्योतक है, इस भूमि से ही समस्त रसोत्सव प्रकट होते हैं, जिसकी तरंगे सम्पूर्ण भारतवर्ष व विश्व में प्रसरित हो जाती हैं । ब्रज के समस्त रसमय पर्वों की परमाचार्या रसेश्वरी श्रीराधिकारानी ही हैं । श्रीजी की कृपा से ही समस्त रस की लीलाओं का सरस सम्पादन होता है । ब्रजरसमय पर्वों की परम्परा में एक लीला है – 'साँझी लीला' । 'साँझी' नाम सुनते ही एक विशेष रसानुभूति होती है क्योंकि नाम में ही समस्त गुण-भाव छिपे रहते हैं और 'नामाराधक' के श्रद्धा-समर्पण-भक्ति भाव के अनुरूप ही वह प्रकट होकर अनुभव कराते हैं । 'साँझी' शब्द का सामान्य अर्थ है - 'मिलन' । 'मिलन' अनेक प्रकार के होते हैं, जैसे - गुण, कर्म, धर्म, प्रकृति, इष्ट वस्तु-व्यक्ति इत्यादि का मिलन । रात व दिन का जिस समय मिलन होता है, उसे साँझ (संध्या) कहते हैं ।

'साँझी लीला' श्रीराधारानी व उनकी सखियों के द्वारा संध्याकालीन समय में सम्पन्न होने के कारण इसका ये 'साँझी' नाम हुआ तथा साँझी देवी (जिसे ब्रजवासीजन गौरी पार्वतीजी का भी स्वरूप मानते हैं) की पूजा-अर्चना के कारण भी ये नाम पड़ गया । कम शब्दों में 'साँझी लीला' का स्वरूप है – मिलन कराने वाली लीला अर्थात् जिस लीला के माध्यम से सखी-सहचरियों, श्रीजी को श्रीकृष्ण व उनके दिव्य प्रेम की सहज प्राप्ति होती है, उसे साँझी लीला कहते हैं । इस लीला में कभी पुष्पों द्वारा साँझी देवी का आराधन होता है या कोई श्रीकृष्णलीला के चित्र बनाकर श्रृंगार किया जाता है अथवा रंगों द्वारा विभिन्न लीलाओं की रंगोलियाँ सजाई जाती हैं । इस प्रकार विभिन्न रूपों में ये महोत्सव मनाते हैं –

साँझी लीला का स्थल 'पाडरवन' है । "साँझी लीला में पुष्प चयन स्थल" यहाँ पाडर के पुष्प बहुत होते थे । जब सखियाँ और श्रीजी यहाँ फूलों के लिए आती थीं तो ठाकुर जी सखी का वेष बनाकर इनसे मिलते थे । यह पाडरवन साँझी लीला स्थल है । साँझी लीला ब्रज में बड़ी नामी है । आज भी ब्रज की कन्यायें पितृपक्ष में साँझी बनाती हैं और साँझी देवी की पूजा करती हैं । उस समय श्रीजी भी साँझी बनाती थीं । ठाकुर जी वेष बदल करके, साँझी पुजवाने पंडितानी बनकर आते थे और साँझी पुजवाते थे । "फुलवा बीने राधा प्यारी भोरी रंग रंगीली बाल" (रसिया रासेश्वरी)

पाडरखंडी (पाडरवन) की लीला है – एक दिन श्याम सुन्दर पाडरखंडी में आकर गीत गा रहे थे । इतने में, श्याम सुन्दर के गीत को सुनकर, बहुत से मोर आ गये । जब मोर बोले, तो बादल भी आ गये कि मोर बोल रहे हैं, हम क्यों रुकें? यह ब्रज की विचित्र लीला है और उसी समय थोड़ी-थोड़ी धीमी-धीमी बूँदें भी गिरने लगीं । ठाकुर जी का पीताम्बर भीग गया, गीला पीताम्बर ठाकुर जी के शरीर से चिपक रहा है । यही नहीं सखियाँ बोलीं – "अरे ! कन्हैया भीग गये, पीताम्बर भी भीग गया, लेकिन ये बैरन मुरली नहीं भीग रही है, ये बराबर बज रही है । देखो तो पानी में मस्त होकर कैसे जोर से गा रही है !" सारा गोपी समुदाय इस लीला को देखकर आनन्दमग्न हो रहा है ।

कबहूँ पाडर खंडी जहाँ । रचैं हिंडोरौ इहि विधि तहाँ ॥ (ब्र.प्रे.सा.लहरी१० चौ.७१)

श्री हित हरिवंश महाप्रभु कृत साँझी उत्सव (पद ६) कुंवरि लड़ैती खेलहीं सब सखियनि लिए संग हो ।

पाडर सखी लखी सखियनी में करि पाडर की माला । पाडर के पायनि तर लोटति पंचवान की वाला ।

इसी पाडर वन के भीतर एक रास मण्डल भी है ।

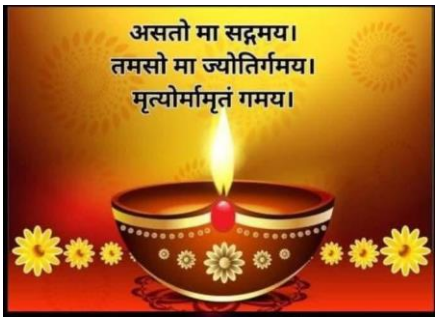

श्रीब्रज-वसुन्धरा की दीपावली

'दीपावली' का नाम सुनते ही हृदय में स्वाभाविक ही एक नवीन उमंग-आनन्द की अनुभूति होती है । 'दीपावली' का शाब्दिक अर्थ है - दीपों की अवली अर्थात् दीपकों की माला, जहाँ जलते हुए दीपों का पंक्तिबद्ध समूह होता है, उसे 'दीपावली' कहते हैं । दीपावली का दर्शन करते ही मनमयूर परमानन्द में नाचने लगता है । प्रेमी भक्तजन अपने प्रेमानन्द से परिपूर्ण अन्तःकरण के भावों को 'दीपावली-महोत्सव' के रूप में प्रकट करते हैं । प्रेम-रस-आनन्द को लोग अनेकों रूपों में व्यक्त करते हैं, जैसे – उत्सव-पर्वों को मनाकर, नृत्यगानमय संगीत के माध्यम से, विविध कलाओं के प्रदर्शन द्वारा विविध भावों की अभिव्यक्ति करते हैं । इन सभी विधाओं का केन्द्र, आधार व स्रोत 'श्रीब्रज' ही है । इसीलिये 'दीपावली' की भी प्राकट्य भूमि ब्रज ही है । मूल स्वरूप में 'दीपावली' मनाने की परम्परा परम प्रेमरसमयी 'श्रीब्रजभूमि' से ही सर्वत्र संचरित हुई है । प्राचीनकाल में विशेष आनन्दरसोत्सव में प्रायः लोग दीप-प्रज्वलित करते अथवा जलते हुए दीपकों की कतार को सजाते थे । आज भी आधुनिक युग में जगह-जगह विशेष उत्सव में लाइटिंग (छोटे-छोटे बल्बों) के रूप में सजावट करते हैं; ये सब दीपावली-परम्परा की ही तरंगें हैं । सनातन भारतीय संस्कृति में दीपावली पर्व मनाने के अनेकों कारण हैं – जैसे – त्रेतायुग में

भगवान् श्रीराम चौदह वर्ष के वनवासकाल में लंका में रावण को मारकर विजय प्राप्त करके माता जानकीजी के साथ सपरिकर जब अयोध्या में आये हैं, तब समस्त अयोध्यावासियों ने प्रभु श्रीराम के आगमन-उत्सव में असंख्य दीप जलाये थे । इसी प्रकार प्रत्येक युग में विविध भाँति के महोत्सवों में भी दीप जलाने की प्रथायें प्रचलित हैं । दीप-महोत्सव (दीपावली) मनाने का आधार स्वरूप उद्गम-स्थल 'ब्रजभूमि' होने के प्रमाण ग्रंथों में प्राप्त होते हैं, जैसे –चाचा श्रीवृन्दावनदासजीमहाराज ब्रजमण्डल के परम रसिक संत हुए हैं, आपने अपने सद्ग्रन्थ 'श्रीब्रजप्रेमानन्द सागर' में लिखा है – **"मूरति धरें दिवारी जाँनौ । कुँवरि दरस हित आई मानौं ॥"**

अर्थात् ब्रज में दीपावली साक्षात् स्वरूप से कुँवरि राधिका का दर्शन करती है ।

"रजनी दरस्यौ मंगल भारी । ब्रज खेलै जु सदेह दिवारी ॥"

परम मंगलकारिणी दीपावली ब्रज में साक्षात् रूप धारणकर के खेलती है । दीपावली की मनोरम शोभा को देखकर स्वयं श्रीश्यामसुन्दर तो यहाँ तक कहते हैं – "भैया मो मन ऐसें चहै । अस त्यौहार सदा ब्रज रहै ॥" हे सखाओ ! मेरे मन में तो यही इच्छा है कि दीपावली का आनन्द-उत्सव तो ब्रज में सदैव रहे । "ऐसें कह्यौ नन्द के लाल । सत्य-सत्य बोलें सब ग्वाल ॥" लाला कन्हैया के मन की वांछा (इच्छा) को परिपूर्ण करने के लिए ग्वालवालों की सखा-मंडली मानो आशीर्वाद देते हुए कहती है कि सत्य हो ....सत्य हो... । इसीलिये ग्वाल-सखाओं व कन्हैयालाल की मनोवांछित हार्दिक अभिलाषा को पूर्ण करने के लिए ही एक रूप में प्रेम-रस-आनन्द की परम भूमि 'ब्रज' में 'दीपावली' नित्य निरन्तर रहती है । सनातन भारतीय संस्कृति के पर्वों में 'दीपावली' बहुत बड़ा मंगलकारी उत्सव है, जो प्रतिवर्ष कार्तिक, कृष्ण, अमावस्या की रात्रि में दीपों को जलाकर अति आनन्द-उमंग-उल्लास के साथ मनाया जाता है । दीपावली में चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देता है । सहज ही जन-जन में उत्सव मनाने का उत्साह दिखाई देता है । वास्तव में दीपावली का सच्चा स्वरूप ब्रज-वसुन्धरा से ही प्रकट हुआ है, जिसकी भाव-तरंगें सब जगह फैली हुई हैं । प्रेम-रस-आनन्द की साक्षात् प्रकट-भूमि 'ब्रज' ही है, जहाँ दीपावली-महापर्व को मनाने की परम्परा अनादिकाल से चली आ रही है, जो नित्य गोलोक धाम से ही प्रकटी है । ब्रज की दीपावली में ब्रजभूमि, यमुनाजी व गोवर्द्धन की आराधन-महिमा का प्रकाश प्रकट होता है । इस दीप-महोत्सव का भाव-प्रकाश समस्त पृथ्वी के धाम-तीर्थों व जन-जन, घर-घर में गया है । इस प्रकार से एक रूप में ब्रज के बाहर भी दीपावली के अवसर पर यमुना-पूजन, गोवर्द्धन-पूजन इत्यादि के माध्यम से ब्रजभाव की ही आराधना-उपासना होती है । दीपावली के परम पावनमय अवसर पर हम सब लोगों को यही सबसे बड़ी प्रेरणा लेनी है कि श्रीब्रजभूमि की असीम करुणामयी महिमा को जानते हुए नित्य सत्संग-सेवा-आराधना सुदृढ़ निष्ठा के साथ अवश्य करनी है । जिससे जन-जन के अन्तःकरण में श्रीभक्तिमय दीप का प्रकाश होगा, तो दीपावली-पर्व मनाने की सच्ची सार्थकता सिद्ध होगी .....। श्रीराधारानी हम सब पर कृपा-करुणा करें.....।

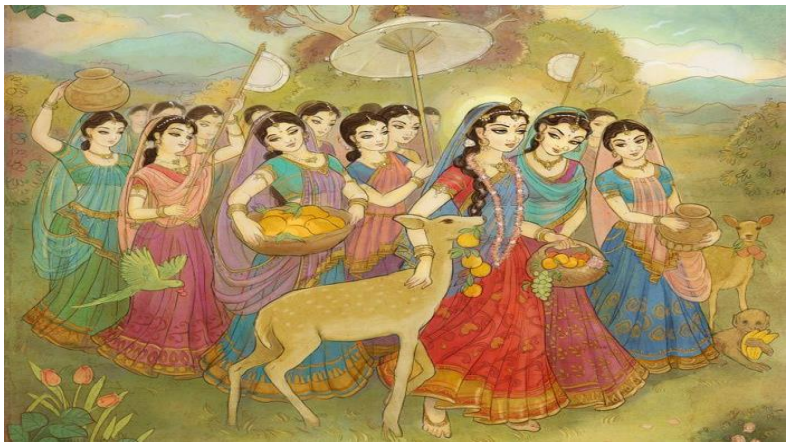

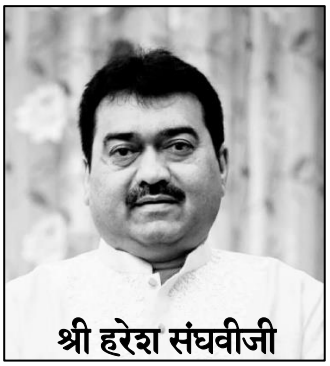
श्री हरेश संघवीजी

श्रीमाताजी गौशाला में श्रीरामकथा का सफल आयोजन

२० सितम्बर से २८ सितम्बर तक पूज्य श्रीमुरारीबापूजी की कथा, श्रीधाम बरसाना में श्रीमानमंदिर सेवा संस्थान और श्रीमाताजी गौशाला के लाभार्थ हुई थी । यह एक अलौकिक कथा थी और इसमें एक अलग ही आध्यात्मिक अनुभूति हो रही थी । इस कथा में बहुसंख्या में वैष्णवजन आये कथा श्रवण करने और संत महात्मा भी सभी जगह से पधारे, यही साबित करते हैं कि वहाँ पर सभी को प्रसन्नता मिली । इतनी गर्मी होने के बावजूद भी प्रतिदिन दस हज़ार भक्तों का आना और भारत भर से व ब्रजमण्डल से सारे साधु-संतों का आना यही बताते हैं कि गौमाता की पूरी कृपा बनी रही और श्रीराधारानी की कृपा भी, इसीलिए यह कार्यक्रम सम्भव हुआ है । हम तो केवल मात्र एक मनोरथी के रूप में आये थे । लेकिन यह सारी सफलता पूज्यश्री बाबामहाराज के आशीर्वाद से हुई । राधारानी की कृपा और पूज्य बापू की भी अत्यन्त करुणा हमारे पर रही, इनकी कृपा से ही यह कथा इतनी शान्तिपूर्ण तरीके से आनन्दपूर्वक सम्पन्न हो पाई और सभी वैष्णवों ने अच्छी तरह से लाभ भी लिया । साथ-साथ में जो कि हमारा लक्ष्य था – लोगों को गौसेवा के लिए प्रेरित करना, गौशाला से जोड़ना; वह बहुत अच्छी सफलता हम प्राप्त कर पाए । इस कथा के माध्यम से सोलह से सत्रह करोड़ रुपये का एक बड़ा अनुदान भी माताजी गौशाला को मिला है, तो मुझे लगता है कि इस कथा के माध्यम से हम कई लक्ष्य हासिल कर पाए – आध्यात्मिक चेतना, लोक-जागृति, गायों के प्रति लोगों की प्रेम-भावना का बढ़ना और साथ-साथ में मानव-कल्याण के भी काम हुए । पूज्य बापूजी भी बहुत ही प्रसन्न हुए थे । मेरी पर्सनल (व्यक्तिगत) दो-तीन बार बापूजी से बात हुई थी तो बापूजी ने भी अपनी प्रसन्नता व्यक्त की थी । विशेष तो श्रीहनुमानजी की भी कृपा रही कि इतना बड़ा कार्यक्रम होने के बाद में कोई ऐसा काम नहीं हुआ, कोई बीमार नहीं हुआ, कोई नुकसान नहीं हुआ, कोई तूफान नहीं आया । ये सब बातें यह संकेत करती हैं कि यह सब गायों की कृपा, राधारानी की कृपा, हनुमानजी की कृपा, श्रीबाबामहाराज की कृपा से ही सम्भव हुआ है और आने वाले दिनों में हम चाहते हैं कि श्रीमाताजी गोशाला के प्रति लोगों की और ज्यादा जागरूकता बढ़े । भारतवर्ष में जितने भी हिन्दू रहते हैं, गायों के प्रति सेवा करें, गायों के क़त्ल को रुकवाएँ और मानव-सेवा भी बढ़े । हमें विश्वास है कि हमारा विचार आगे बढ़ेगा और इस तरह के हम आगे अभी और भी कार्यक्रम करेंगे; ऐसी हमारी इच्छा है, राधे राधे।

श्री हरये नमः

परम श्रद्धेय
भगवत - भागवत चरणारविन्द प्रेमी
भक्तजन, अनन्त कोटि ब्रम्हाण्ड नायक श्री जानकी
बल्लभ लाल जी की असीम कृपा एवं संत-सद्गुरुजनों
की सत्प्रेरणा से तथा श्री सीताराम विवाह महामहोत्सव के वर्तमान
संरक्षक श्री श्री अनन्त श्री विभूषित गो संत सेवी परम पूज्य
श्री रामरजदास जी महाराज प्रेम सरोवर (बरसाना धाम) के पावन
सानिध्य में श्री खाकी बाबा सरकार का 56 वाँ

"श्री सिय पिय मिलन महा-महोत्सव"

श्री रामलीला क्रम

18	नवम्बर 2025 मंगलवार	श्री शिव पार्वती विवाह प्रसंग
19	नवम्बर 2025 बुधवार	श्री जय विजय प्रसंग (अवतार प्रायोजन)
20	नवम्बर 2025 गुरुवार	श्री राम जन्म एवं बाल लीला प्रसंग
21	नवम्बर 2025 शुक्रवार	श्री सीता जन्म एवं विश्वामित्र आगमन, अहिल्योद्धार प्रसंग
22	नवम्बर 2025 शनिवार	श्री जनकपुर प्रवेश एवं नगर दर्शन
23	नवम्बर 2025 रविवार	पुष्पवाटिका प्रसंग प्रातः 10 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक धनुष यज्ञ प्रसंग सायं 7 बजे से
24	नवम्बर 2025 सोमवार	श्री किशोरी जी का हल्दी मटकोर विधान एवं श्री राम बारात शोभा यात्रा
25	नवम्बर 2025 मंगलवार	श्री राम विवाह प्रसंग
26	नवम्बर 2025 बुधवार	श्री राम कलेवा प्रसंग

लीला व्यास जी
श्री नरहरिदास भक्तमाली

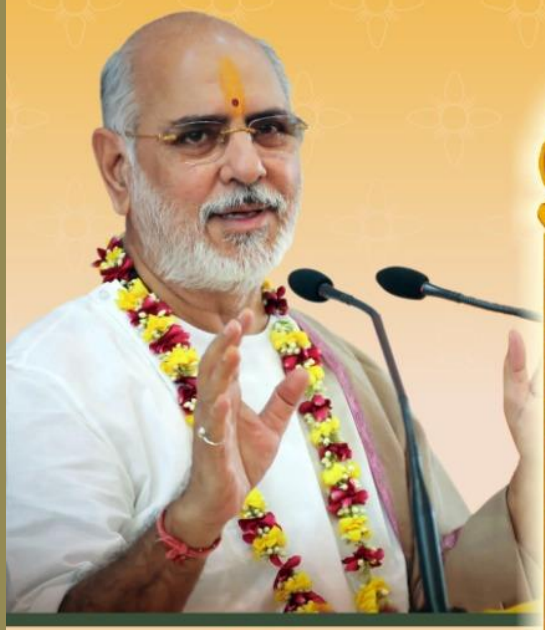

RNI REFERENCE NO. 1313397- REGISTRATION NO. UP BIL-2017/72945-TITLE CODE UP BIL-04953 POSTAL REGD.NO. 093/2024-2026 श्री मान मन्दिर सेवा संस्थान के लिए प्रकाशक/मुद्रक एवं संपादक राधाकांत शास्त्री द्वारा 'गुप्ता प्रिन्टिंग प्रेस, खरौट गेट, कोसीकलाँ, मथुरा. उत्तरप्रदेश' से मुद्रित एवं मान मन्दिर सेवा संस्थान, गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.) से प्रकाशित,AGRA/WPP-12/2024-2026 AT 31.12.26